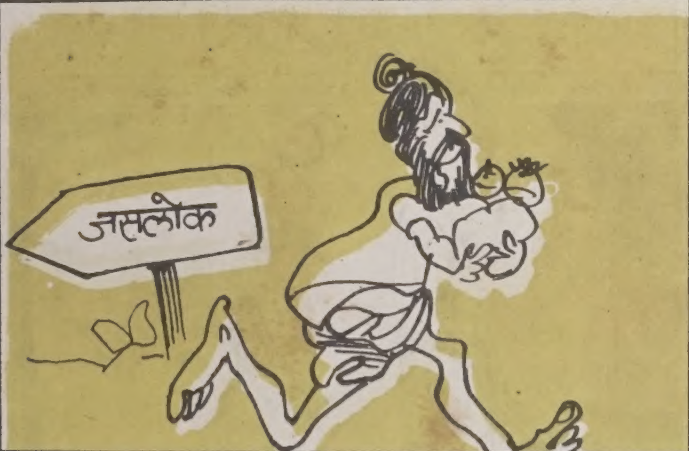
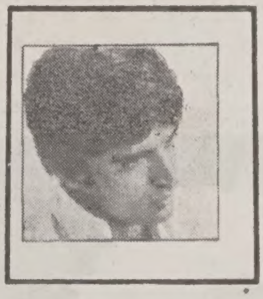
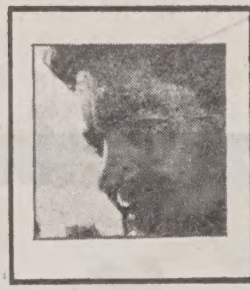
सलीम-जावेद कृत
रामलीला



शहर के मशहूर सेठ और मेयर दशरथ के, अस्पताल में चार बच्चे हुये हैं। विश्वामित्र नाम का एक साधू पुरानी दुश्मनी निकालने के लिये चार बच्चों में से दो राम और लक्षमण को नर्स से नजर बचा कर उड़ा कर ले जाता है। दशरथ पुलिस में रिपोर्ट करते हैं परन्तु उनका कुछ पता नहीं लगता।





तुलसीदास और बाल्मीकि कृत रामायणों के बारे में तो हम जानते हैं। उन्हीं के आधार पर दशहरा पर रामलीला खेली जाती हैं। हमारे दिल में यह अनोखा ख्याल आया कि अगर रामलीला की स्क्रिप्ट तुलसी या बाल्मीकि की जगह फिल्मों की मशहूर लेखक जोड़ी सलीम-जावेद ने लिखी होती तो कैसी होती? वे यहां भी अपने फिल्मी फार्मूले ठूंस-ठूंस कर भरते। उनकी रामलीला कुछ इस प्रकार होती—



बन में राम लक्षमण पल कर बड़े होते हैं। तट के पास
=का जंगल होने के कारण वहां स्मगलरों के बहुत बड़े
अड्डे थे। विश्वामित्र को वह सी. आई. डी. का आदमी=
समझ कर वहां से खदेड़ना चाहते हैं। परन्तु राम और
लक्षमण उनके आदमियों को मार भगाते हैं। लड़ाई एक
तहखाने में होती है। जहां खाली ड्रम और खाली बक्सों
के ढेर लगे हैं।



एक दिन जनक की लड़की सीता अपनी सहेलियों के साथ उसी बन में पिकनिक मनाने आती है। सीता एक अल्हड़पन का 'गया बचपन आयी जवानी' छाप गाना गाती हुई तितली के पीछे दौड़ती-दौड़ती उसी ओर आती है जहां राम व लक्षमण बैठे कवितायें लिख रहे हैं। राम से सीता की आंखें चार होती हैं पृष्ठ भूमि में सितार बजता है।



सीता घर पहुंचने पर राम की याद में खोई गुमसुम रहती है, खाना भी नहीं खाती। उसकी सहेलियां रोज समझा जाती हैं और सीता को चिढ़ाने के लिये गाना गाती हैं 'जब प्यार किसी से होता है तो दर्द सा दिल में होता है।'



जनक अपने इम्पोर्ट एक्सपोर्ट आफिस की लन्दन में नयी ब्रांच खुलने की खुशी में एक कव्वाली प्रतियोगिता का आयोजन करते हैं। विश्वामित्र, राम व लक्ष्मण भी कव्वालों का वेष धारण करके आते हैं व प्रथम पुरस्कार जीतते हैं।



पिछवाड़े बाग में चोरी-चोरी सीता राम से मिलती है। दोनों उम्र भर एक-दूसरे का साथ देने का वादा करते हैं। उधर विश्वामित्र को अपनी गलती का अहसास होता है। उसका नुकसान दशरथ ने नहीं किसी और ने ही किया था। वह राम व लक्ष्मण को दशरथ के सुपुर्द करते हैं।



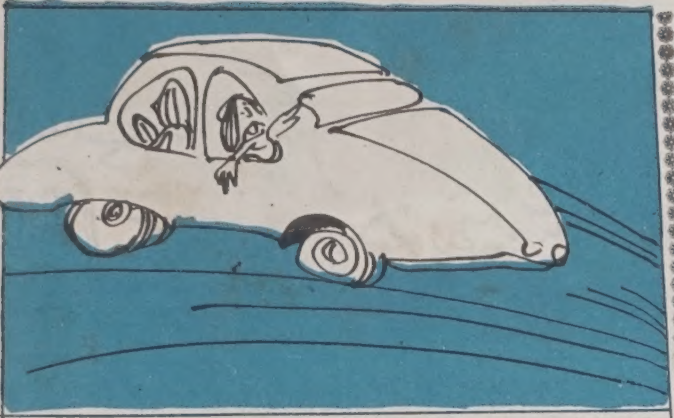
राम के बर्थ डे पर राम की सौतेली मां कैकेयी राम व लक्ष्मण को बर्थ डे प्रेजेन्ट के तौर पर मारिशस के दो टिकट व १४ दिन पोर्ट लुयी के शानदार होटल में रहने का बन्दोवस्त करती है।



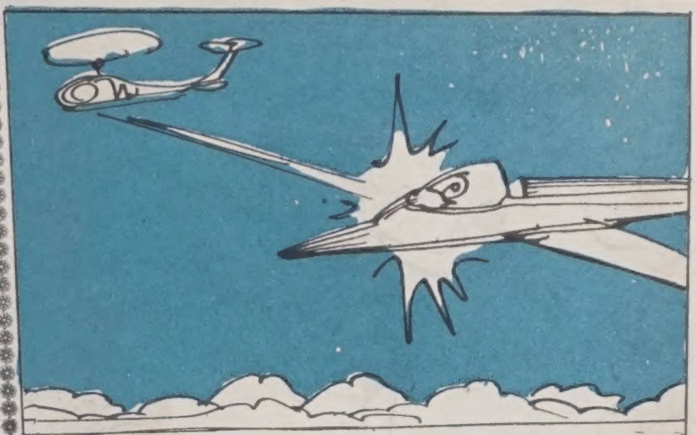
राम व लक्ष्मण छुट्टियां बिताने के लिये हवाई जहाज से रवाना हो जाते हैं। हवाई जहाज में वह एक गाना गाते हैं 'सुहाना सफर और वह मौसम हसीं' दूसरे मुसाफिर भी सिर हिला कर उनका साथ देते हैं।



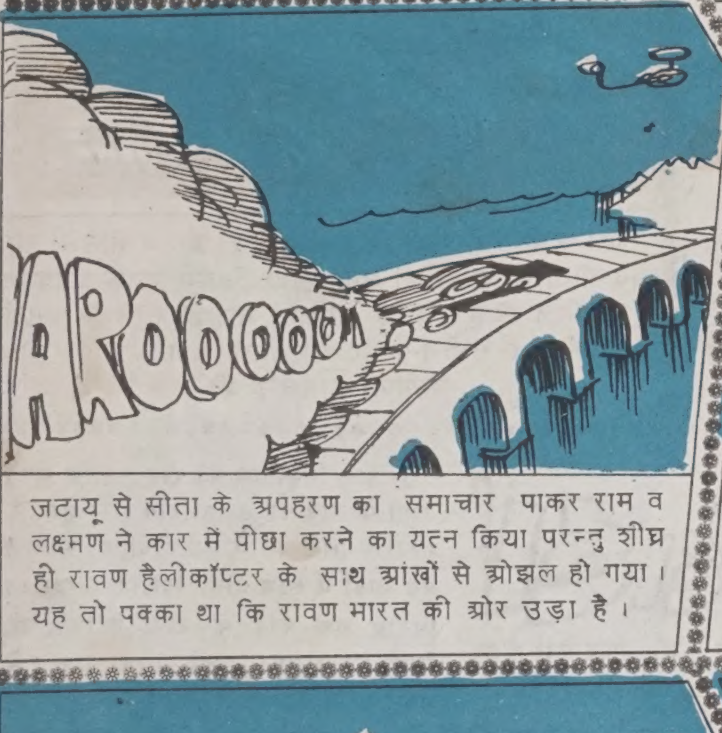
मारीशस में राम को होटल के लॉज में सीता मिल जाती है। वह अपने पिता के साथ आई थी जो अपने बिजनैस सिलसिले में वहां आये थे। दोनों पार्क में जाकर एक युगल गान गाकर अपने प्यार पर रसीदी टिकट लगा देते हैं।



रावण (स्मगलर) भी मारीशस में आया हुआ था। रावण की विश्वामित्र के साथ वाले दिनों में राम से कई बार लड़ाई हुई थी। रावण को बदला लेने का यह अच्छा मौका लगा। लगे हाथ वह जनक को ब्लैकमेल भी कर सकेगा। रावण-सीता का अपहरण कर एक कार में उसे ले भागता है।



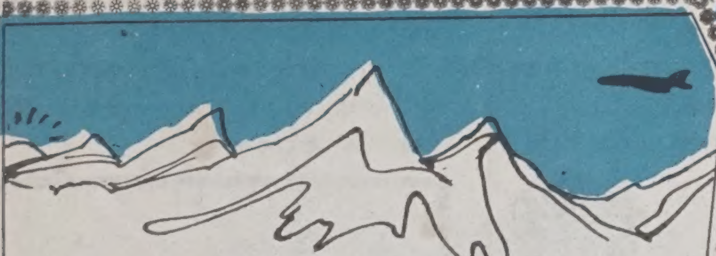
कुछ दूर खड़े अपने हैली काप्टर पर सवार होकर भागता है। उसी समय फ्लाइंग क्लब का राम का एक मित्र जटायू ग्लाइडिंग कर रहा था उसने सीता पहचान ली। हैलीकाप्टर को रोकने का प्रयत्न किया परन्तु रावण ने मशीनगन से ग्लाइडर पर हमला कर उसे गिरा दिया। जटायू सख्त जख़्मी हो गया।



जटायू से सीता के अपहरण का समाचार पाकर राम व लक्ष्मण ने कार में पीछा करने का यत्न किया परन्तु शीघ्र ही रावण हैलीकॉप्टर के साथ आंखों से ओझल हो गया। यह तो पक्का था कि रावण भारत की ओर उड़ा है।



राम और लक्ष्मण सीता की खोज में लौट कर आते समय मारीशस होटल के वेटर (जिसने उनकी सर्विस की) बजरंगी प्रसाद को भी साथ लेते आये। उसे उन्होंने बाद में अपने पिता की कम्पनी में अच्छी नौकरी देने का वायदा भी किया।



भारत पहुंचने पर उन्हें पता लगता है कि रावण ने अब अपना अड्डा काश्मीर में बना रखा है। (काश्मीर के सीन के बिना हिन्दी फिल्म अधूरी ही समझी जाती है।) तीनों काश्मीर के लिये रवाना हो जाते हैं।



वहां बजरंगी प्रसाद एक मदारी का भेष बना कर रावण के अड्डे में चला जाता है। वहां उसे यह भी पता करना था कि सीता जी वहां हैं भी या नहीं। बन्दर कई करतब करने में माहिर हैं।



एक देसी डाक्टर बता रहा था, 'सांप के काटे का सबसे अच्छा इलाज व्हिस्की है। बस वह ठीक समय और ठीक मात्रा में प्रयोग होनी चाहिए। ठीक समय यह है कि जब सांप तुम्हें काटे उस समय तुम्हारे पेट में व्हिस्की मौजूद होनी चाहिये।'

●

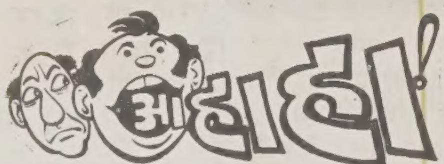
मोहनलाल का दिल भर आया। उस का मित्र पट्टियों से बंधा खाट पर पड़ा था। सहानुभूति दिखाता हुआ वह बोला, 'अरे, तुम्हें क्या हो गया गोविन्द ? चार दिन हुए तो मैंने तुम्हें उस घुंघराले बालों वाली युवती के साथ नाचते देखा था।'

'हां !' सांस भरकर गोविन्द बोला, 'और यह उसके पति ने भी देख लिया था।'

●

अस्पताल में डाक्टर इन्चार्ज के कमरे में घबराई नर्स पहुंची, 'डाक्टर, नं० ग्यारह के रोगी को बुखार १०६ डिग्री है।

डाक्टर ने आदेश दिया, 'उसे मेरे कमरे



में लाकर सुला दो। और फिर मेरा हीटर बन्द कर देना।'

●

'मेरे विचार से तुम्हारी कमर का दर्द किसी चीज के खाने से हुआ है।'

'शायद कल खाये अमरूदों से हो गया

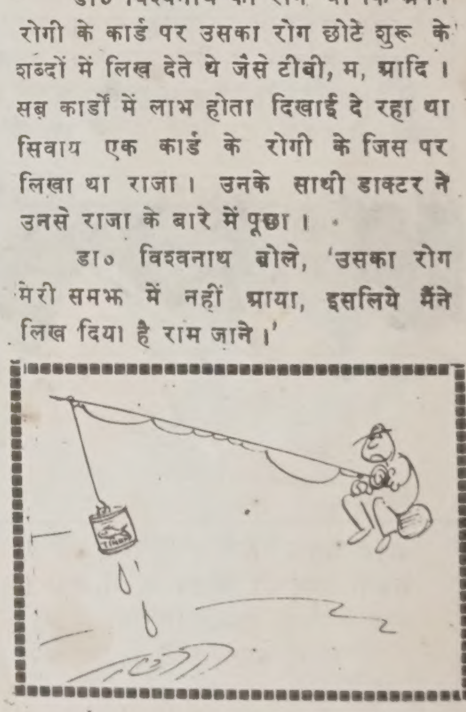


हो। वे कच्चे थे।'

'तो अपनी आंखों के लिये दवाई लेते जाओ, आगे काम आयेगी।'

डा० विश्वनाथ को रोग था कि अपने रोगी के कार्ड पर उसका रोग छोटे शुरू के शब्दों में लिख देते थे जैसे टीबी, म, आदि। सब कार्डों में लाभ होता दिखाई दे रहा था सिवाय एक कार्ड के रोगी के जिस पर लिखा था राजा। उनके साथी डाक्टर ने उनसे राजा के बारे में पूछा।

डा० विश्वनाथ बोले, 'उसका रोग मेरी समझ में नहीं आया, इसलिये मैंने लिख दिया है राम जाने।'



बन्द करो बकवास


कहीं आग न लग जाए हां SSS कहीं आग न लग जाए।
बन्द करो बकवास,। घर के अन्दर तो मना किया है अब क्या मुझे सिगरेट बाहर भी नहीं पीने दोगी ?
गरजत बरसत सावन आयो रे
बन्द करो बकवास और जल्दी से कपड़े हटाओ वर्ना "गरजत बरसत साहब आयो रे" हो जाएगा।
जब तक है जान, जाने जहान, मैं नाचूंगी।
बन्द करो बकवास। नाचने का इतना शौक है तो कहीं ग्राउण्ड फ्लोर पर मकान लो।

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

केवल प्रकाश—काशीपुर : हंस-हंसकर जीने के लिये क्या करना चाहिये ?

उ० : एक दीवाना के बाद दूसरे की प्रतीक्षा ।

***

किशोर नारंग—इन्दौर : मतलबी दोस्त से कहां तक दोस्ती रखना ठीक है ?

उ० : जहां तक आपका मतलब निकलता रहे और यही प्रश्न वह मतलबी हम से न पूछे ।

***

नरिन्द्र कुमार निन्दी—कपूरथला : प्रिय चाचा जी, क्या आदमी की उम्र ५०० वर्ष हो सकती है ?

उ० : वैज्ञानिक इसके लिये सर तोड़ कोशिश कर रहे हैं, कि कोई ऐसी तरकीब निकाली जाये कि जो एक बार पैदा हो गया है वह कभी न मरे, पर हमें पता है कि मनुष्य अपने इस प्रयोग में सफल हो गया तो एक बहुत बड़ी मुसीबत खड़ी हो जायेगी । जिन्दगी से घबराकर कोई मरना चाहेगा तो उसे समाचार-पत्रों में विज्ञापन देना पड़ेगा । 'मैं मरना चाहता हूं । कृपया मुझ पर दया कीजिये । मुझे मरने की तरकीब बताने वाले को मुंह मांगा इनाम ।' और एक और प्रकार के विज्ञापन छपा करेंगे । 'मरने के लिए हमारी सेवायें प्राप्त कीजिये । मरने की पूरी गारंटी, न मरे तो दाम वापस । संसार के कितने ही बड़े-बड़े लोग हमारी कम्पनी द्वारा मरकर लाभ उठा चुके हैं । एकदम मरने की फीस ५०० रुपया । आहिस्ता-आहिस्ता मरने की फीस ३०० रुपया । एक साथ दो मरने वालों को खास छूट ।' और ऐसी हालत में भी शायर का यह शेर आज जैसा ही मजा देगा :

अब तो घबरा के ये कहते हैं कि मर जायेंगे,
मर के भी चैन ना पाया तो कहां जायेंगे ।

***

विजय चोपड़ा—पानीपत : आप अपना मुंह फाड़ कर क्यों रखते हैं ?

उ० : यह बताने के लिए कि आप कोई बढ़िया माल खाएं तो इस मुंह को न भूलें और एक बात याद रखें :

आप क्या खा रहे हैं छुप-छुपकर,
मेहरबान हम भी जान रखते हैं ।
हम भी चूसेंगे आम का पापड़,
हम भी मुंह में जुबान रखते हैं ।

***

राजेश मांगा—दिल्ली : आप फिल्म कलाकार क्यों नहीं बन जाते ? आपकी शक्ल तो बिल्कुल असरानी जैसी है ।

उ० : कर दी ना आपने भी दिल तोड़ने वाली बात ! कोई कहता है, हमारी हरकतें राजकपूर जैसी हैं । भोलापन राजेश खन्ना जैसा है । अकड़ अमिताभ बच्चन जैसी है । चुलबुलापन देव आनन्द जैसा है । तो फिर हमारे अन्दर अपना कुछ है ही नहीं ? और जो देवी जी हैं उन्हें आप डिम्पल कपाड़िया या जीनत अमान कह सकते हैं, पर आंखों पर पट्टी बांध कर ।

***

सुरेशचन्द्र शर्मा—जबलपुर : चिल्ली से मिलने के लिए मुझे क्या करना होगा ?

उ० : अपने हाथ का बीमा । हाथ मिलाने के बाद आप समझेंगे कि हमारी बात का मतलब क्या है ।

***

कुसुम लता चौधरी—अलवर : क्या आपने कभी सोचा है कि आप नेताओं की तरह पूरे भारत का दौरा करें तो आपकी वैल्यू बढ़ जाएगी ?



उ० : मिर्गी का दौरा पड़ जायेगा हमें तो इतना पता है । १५ पैसे का पोस्टकार्ड पूरे भारत का दौरा कर सकता है । और जब उसके सर पर डाक बाबू की मुहर लगती है तो उसकी वैल्यू एक पैसे की भी नहीं रहती यह बात हम भुलाये से भी नहीं भूल पाते ।

मनीरा शर्मा—गुड़गावां : मैं कार्टून बनाकर भेजूं तो क्या आप छापेंगे ?

उ० : पसन्द आये तो अवश्य छापेंगे ।

***

अखिल बख्शी—नई दिल्ली : मैं चिपकियां भेजना चाहता हूं । कृपया भेजने का पता बतायें ?

उ० : आप कोई भी सामग्री भेजें । पता एक ही है ।

सम्पादक दीवाना,
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

***

नारायण शर्मा—नाहरकटिया : चाचा जी, हमें अपने परिवार के बारे में बतायें ?

उ० : ताकि यह सरकार जब परिवार-नियोजन की ओर ध्यान दे तो सबसे पहले हमें अन्दर कर दे ? माई डीयर नारायण शर्मा, हमें यह कहने में जरा भी शर्म नहीं कि हमारे दस लाख से भी अधिक दीवाने भतीजे हैं जो हर सप्ताह कई क्विंटल चिट्ठियों के बोझ तले दाब देते हैं । हे नारायण, हे नारायण !!!

***

कुमारी पुष्पा—बम्बई : चाचा जी आपने इतनी बुद्धि कहां से पाई ?

उ० : हम इतने बुद्धू हैं कि हमें इसका पता ही नहीं ।

***

प्रदीप कुमार—गया, बिहार : आपका चिल्ली से क्या रिश्ता है ?

उ० : जो हम आपके हैं । वही वह हमारा है ।

***

तेज प्रसाद दुलियाजन—आसाम : मैं दीवाना में एक बाल जासूसी कहानी प्रकाशित करवाना चाहता हूं ।

उ० : पसन्द आई तो अवश्य प्रकाशित करेंगे और यह बात भी सत्य है कि हमें अपने लिखे प्रश्नों के उत्तर पसन्द नहीं आते, हम उन्हें भी प्रकाशित नहीं करते, चाहे हम इसका कितना भी बुरा मानें ।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

धारावाहिक जासूसी उपन्यास

भाग २

आखिरी चीख

लेखक :
कैप्टन युद्धवीर

सुधा गुजराल धनी विधवा थी । उसकी दोनों बेटियां पूर्णिमा और नरोत्तमा बेहद सुन्दर थीं । पूर्णिमा की शादी हो चुकी थी । उसका पति स्वदेश कुमार मित्तल डिजाइनिंग इंजीनियर था । वह छह दिन बाद टूर से लौटा तो उसके दिल पर गहरी चोट लगी । उसकी प्यारी पत्नी अपनी सहेली के घर एक शादी में शामिल होने गई, तो वहीं उसका दिल डूब जाने से मौत हो गई । यह मौत स्वाभाविक नहीं थी, इसलिए जासूस बलजीत को छानबीन का काम सौंपा गया ।

सभी ओर का धुंधलका उजाले में नहीं बदला था ।

बरेली रोड पर एक छोटा-सा बंगला था । उसके आलीशान बरामदे में एक इक्का खड़ा था । इक्के के आगे जुता हुआ घोड़ा छोटा था, मगर शक्तिशाली था । इक्के वाला भी बांका-छबीला नौजवान था । उसके सिर पर दुपल्ली टोपी थी, तन पर कढ़ा हुआ मलमल का कुर्ता और खुले पांयचों का पाजामा था; पैरों में मोटे तले की चप्पल थीं । हाथ में चाबुक थामे वह बड़ी शान से आवाज लगा रहा था, 'क्यों भई, कोई है ?'

उसके इक्के में एक ऊंचा और लम्बूतरा टोकरा था । टोकरे के ऊपर लाल कागज लिपटा हुआ था । टोकरे के इर्द-गिर्द हरे रंग की रस्सी बंधी हुई थी ।

'अरे भई, कोई है ? यहां तो आवाजें लगाते-लगाते गला ही बैठा जा रहा है ।' इक्के वाला दुबारा बोला ।

इस बार बंगले का सदरदरवाजा खुला । उसमें एक औरत आ खड़ी हुई । वह ब्लाउज और पेटीकोट में थी । नींद से उसकी आंखें बोझिल हो रही थीं । वह झल्ला कर बोली, 'क्या है ? क्यों आसमान सिर पर उठा रखा है ?'

'सेठानी जी मैं भी क्या करता ! रेल गाड़ी अभी आई और मुझे यहां से मंडी पहुंचना है । अपना यह टोकरा रखवा लीजिये और मुझे चलता कीजिये ।'

'टोकरा ? इसमें क्या है ?'

'इलाहाबाद के अमरूद । इलाहाबाद में आपकी बेटी ब्याही हुई न ?' इक्के वाला अपने लच्छेदार लहजे में बोला ।

'हां-हां, मेरी सविता की शादी हुए छह महीने हो गए । क्या ये अमरूद उसी ने भेजे हैं ?'

'जी हां ।'

'मगर'''तुम कहां से ले आए ?'

'बात यह है कि मुझे एक सेठानी ने यह टोकरा आप तक पहुंचाने को कहा था ।'

'कौन सेठानी ?'

'वो भी कोई आप जैसी थीं । बहुत से जेवर पहन रखे थे उन्होंने । उनके साथ एक काला भुजंग मर्द भी था । शायद यह उनका नौकर था । उनके साथ दो कुली थे और यह टोकरा उठाये हुए थे । सेठानी जब मेरे इक्के के पास आयीं तो मैंने समझा कि अपनी तकदीर जाग गई । लेकिन वह मेरे इक्के पर नहीं बैठीं; बोलीं यह टोकरा बरेली रोड पर बँगला नम्बर २१४ में पहुंचा दूं । भला-सा नाम लिया था उन्होंने आपका'''मैं भूल गया । बस, इस बंगले का नम्बर याद रह गया ।'

'कुछ जबानी सन्देश भी दिया था उस सेठानी ने ?'

'हां, कहा था कि टोकरा देने के साथ यह भी बता दूं'''

'क्या ?'

'ये अमरूद आपकी बेटी ने इलाहाबाद से भेजे हैं । उन्होंने दस रुपए का नोट मुझे मजदूरी के तौर पर दे दिया था । मेरी आज रोजी खड़ी हो गई । अब आप झट से अपना यह टोकरा रखवा लीजिए ।'

मिसेज प्रभा कौशल समझ गयीं कि इक्के वाला एक नम्बर बातूनी आदमी है । इन्होंने उसे हुक्म दिया, 'अच्छा ठीक है, ले आओ !'

'यह क्या कह रही हैं आप ?' इक्के-वाले ने जैसे अनहोनी बात पर हैरानी जाहिर कर दी, इस टोकरे को अकेला आदमी नहीं उठा सकता । किसी एक और आदमी को बुलवाइये ।'

'अच्छा तो मैं नौकर को भेजती हूं, वह तुम्हारे साथ मिलकर टोकरा अन्दर रखवा देगा ।' मिसेज प्रभा ने मुड़ते-मुड़ते एका-एक पूछ लिया, 'तुम्हारा क्या नाम है ?'

'सलीम'''लोग मुझे प्यार से सलीमू कहते हैं ।'

मिसेज प्रभा ने मुश्किल से अपनी मुस्कराहट पर काबू पाया और अन्दर चली गई । उन्होंने अपने नौकर करमू को बाहर भेज दिया । जब वह अपने बेडरूम में पहुंची तो उनके पति महोदय भी जाग चुके थे ।

'यह बाहर कौन शोर मचा रहा था ?' प्रभा के पति गिरिजाकिशोर ने पूछा ।

'इक्केवाला था । तुम्हारी बेटी ने अमरूदों का टोकरा भिजवाया था, वही पहुंचाने आया है ।' इतना कहकर मिसेज प्रभा रसोईघर की ओर चल दीं ।

करमू ने सलीमू की मदद से टोकरा पहले कमरे में रखवा लिया । सलीमू हाथ झाड़कर इक्के पर बैठा और चलता बना ।

गिरिजाकिशोर बेडरूम से निकलकर पहले कमरे में आए । टोकरे पर उनकी निगाह पड़ी तो उनके मुंह से निकला, 'टोकरा तो बहुत बड़ा भेजा है सविता ने ! लगता है कि मेरी बेटी को वहां रुपए-पैसे की कोई कमी नहीं । उसका हाथ बहुत खुला जान पड़ता है ।'

वह टोकरे के पास आ गये । झुककर उन्होंने टोकरे की हरी रस्सी खोलनी शुरू की । रस्सी खुल जाने पर ऊपर से लाल कागज निकाला । उसके बाद ढक्कन अलग करके एक तरफ फेंक दिया ।

टोकरे के ऊपर थोड़ी घास-फूस की परत थी । घास हटाई तो कुल छः-सात अमरूद निकले । जब निचली घास हटाने को उन्होंने हाथ मारा तो जोर से चीख पड़े,

प्रभा ! ''''प्रभा !'

प्रभा रसोईघर से भागती हुई चली आई।

गिरिजाकिशोर टोकरे की तरफ पीठ किये खड़े थे। उन्होंने हाथ के इशारे से अपने पीछे पड़े टोकरे की ओर प्रभा का ध्यान खींचा।

प्रभा ने आगे बढ़कर टोकरे में झांका तो उसका चेहरा हैरानी भरी रुलाई से भर गया। जोर-जोर से रोते हुए वह विलाप करने लगी।

गिरिजा किशोर की आंखें डबडबा आयीं।

प्रभा चीखे जा रही थी, 'मैं लुट गयी ! मैं कहीं की न रही ! हाय मेरी बेटी सविता !'

गिरिजाकिशोर स्वयं भी दुःख के मारे निढाल हो रहे थे। वह प्रभा को जोर से रोने से क्यों रोकते !

'हाय, कौन डायन खा गई मेरी लाडली को ?' मिसेज प्रभा ने इतने जोर की दहाड़ मारी कि पीछे की ओर गिर पड़ीं। गिरते ही वह बेहोश हो गयीं।

गिरिजा किशोर चौंककर पलटे। उन्होंने साहस से काम लिया। चटाई से बनाया हुआ वह टोकरा उन्होंने दोनों हाथों का जोर लगाकर फाड़ डाला और दो हिस्सों में अलग कर दिया।

टोकरे में उनकी बेटी सविता की लाश थी। तन पर पेटीकोट और ब्लाऊज था। उसकी गर्दन पर एक जगह बहुत-सी लिपस्टिक लगी हुई थी। बदन पर कोई घाव नहीं था।

गिरिजाकिशोर ने लाश की ओर से ध्यान हटाकर पत्नी की ओर देखा।

अब करमू भी दरवाजे में आ खड़ा था। वह हैरानी में आंखें फाड़-फाड़कर देख रहा था।

'अरे, जल्दी से पानी का गिलास ला !' गिरिजाकिशोर ने हुक्म दिया।

करमू पानी ले आया। उसने अपने मालिक को गिलास थमाते हुए कहा, 'मालिक ! यह कैसा अन्याय किया भगवान ने ? क्या सविता बीबी को इनकी ससुराल वालों ने''''

गिरिजाकिशोर ने उसकी बात का कोई जवाब न दिया और प्रभा के मुंह पर छींटे मारने शुरू कर दिये।

प्रभा होश में आई तो जैसे गूंगी होकर रह गई।

गिरिजाकिशोर उसके पास ही फर्श पर बैठ गए। उन्होंने पत्नी को दिलासा देने की कोशिश की।

प्रभा के मुंह से कोई बोल न निकला। बस, आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी रही।

गिरिजाकिशोर कुछ सोचकर उठे और ड्राइंगरूम में चले आए। उन्होंने कोतवाली का नम्बर मिलाया और सारी कहानी सुना दी।



मिसेज सुधा गुजराल के यहां हर कोई इस इन्तजार में था कि पोस्ट-मार्टम की रिपोर्ट और लाश जल्दी से आ जायें।

छः बजने में अभी पांच मिनट रहते थे कि जासूस बलजीत आ गया। उसके साथ राजीव और अनिला भी थे। बलजीत ने वहां मौजूद लोगों पर निगाह दौड़ाई और पुलिस इन्स्पेक्टर को न पाकर पूछा, 'क्या इन्स्पेक्टर अरोड़ा अभी तक नहीं आए ?'

स्वदेशकुमार मित्तल ने जवाब दिया, 'मैं भी उसी की राह देख रहा हूं। न जाने उसने इतनी देर क्यों लगा दी !'

'आपने कोतवाली को फोन करके नहीं पूछा ?'

'पूछा था। पता चला कि आदर्श अरोड़ा सवा पांच बजे कोतवाली से चला गया था।'

अब इन्तजार करने के अलावा दूसरा चारा नहीं था।

इन्स्पेक्टर आदर्श अरोड़ा साढ़े छः बजे आया। उसकी जीप से जब पूर्णिमा की लाश उतारी गई तो औरतों ने रो-रोकर वातावरण में शोर भर दिया।

'आदर्श !. बड़ी देर लगा दी तुमने ?' स्वदेशकुमार ने कहा।

'बात ही कुछ ऐसी हो गई।'

'क्या हुआ ?'

'बरेली रोड के बंगला नम्बर २१४ से मुझे फोन किया गया कि वहां एक लड़की की लाश टोकरे में बन्द करके भेजी गई है। बंगले के निवासी गिरिजाकिशोर ने बताया कि लाश उनकी बेटी की है। वह इलाहाबाद में ब्याही गई थी। मुझे पहले वहां जाना पड़ा, क्योंकि लाश के बारे में मुझे सूचना ही ऐसी दी गई।'

'कोई खास बात थी क्या ?' बलजीत ने पूछा।

'मुझे लगा कि उनकी बेटी सविता और भाभी पूर्णिमा की हत्याओं में बहुत-सी बातें मेल खाती हैं।'

'आपने लाश देखी है ?'

'हां, उसके बदन पर भी कोई घाव नहीं। मौत हो जाने पर भी मुखड़े पर मौत का असर दिखाई नहीं दिया। पूर्णिमा भाभी की गर्दन पर पाउडर की परत थी; सविता की गर्दन पर लिपस्टिक की परत।'

'आपने लिपस्टिक हटाकर भी देखी ?'

'देखी थी। उसके नीचे वैसा ही निशान था जैसा पूर्णिमा भाभी की गर्दन पर।'

'मच्छर के काटने पर जैसा निशान

(पृष्ठ ३४ पर)



भारत की क्रिकेट टीम फिर आस्ट्रेलिया के दौरे पर जा रही है वहां लिली और थामसन से उनका पाला पड़ेगा। बम्परों की बौछार होगी।
बम्परों का जवाब बम्परों से देने के लिये म्हारे पास कोई फास्ट बॉलर नहीं है। यही क्रिकेट का दुर्भाग्य है।
फास्ट बॉलिंग के लिये शरीर हष्ट-पुष्ट होना जरूरी है। म्हारे देश में खाने को क्या मिलता है? बचपन में लोगों को पूरी खुराक नहीं मिलती, जिस्म पवका नहीं वनता। हड्डी कमजोर रह जाती हैं।
और क्या? खानी मूंग की दाल और बैंगन का भरथा। कहां से होगी तेज गैंदबाजी?
यूरोप के ठंडे देशों की डाइट वहुत तगड़ी है। जभी वहां लोग लम्वे चौड़े होते हैं। फास्ट वॉलिंग कर सकते हैं, स्टैमिना होता है।
This is national crisis man. सारा देश पौष्टिक आहार के अभाव से वीमार और कमजोर है। कैसे काम चलेगा?
लोगों के पास खाने के लिये पैसे भी कम हैं।
चौधरी, थम तो ट्राई करके देख ही सकते हो। भगवान की दया से वचपन में भी थारे खाने-पीने की तंगी नहीं रही। जव थम पैदा हुये तो वागड़ी भैंस सुइ हुई थी। अव भी पैसों की तंगी नहीं है। गाम से गन्ने की फसल का काफी पैसा आ जाता है। जासूसी के काम में खर्च करने के वाद भी पैसा वच ही जाता है।
थम दोनों यूरोपियनों की सी ही तगड़ी डाइट खाकर उनसे लोहा ले सकते हो। आदमी वह जो देश का नाम ऊंचा करके जीये और मरे। आज से ही इस महान कार्य में जुट जाओ। खाओ-पीओ आन्दोलन शुरू करो।
यह ठीक ही कहता है! हम चाहें तो देश को संकट से उभार सकते हैं।
पिलपिल-सिलबिल जनता पार्टी के नाम से गौरमींट बना सकते हैं तो तेज गैंदबाज नहीं बन सकते?

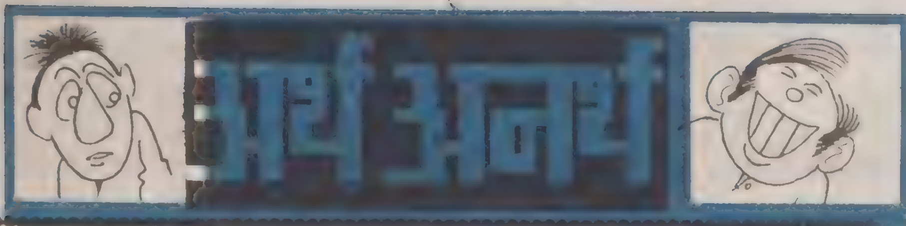


मैंने यूरोपियनों की ड्टैट का पूरा अध्ययन कर लिया है। वही डाइट थमको खाना पड़ेगा। सुबह नाश्ते में चार-चार सलाइस कॉटेज चीज के साथ, मक्खन २०० ग्राम, अंडे फ्राई चार-चार, दो-दो किडनी और लीवर, ब्लैक कॉफी, एक-एक जग संतरे का जूस, छः छः केले, २०० ग्राम सॉसेज, १/२ औंस ब्रांडी, दलिया एक-एक प्लेट और १५० ग्राम कार्न फ्लेक्स। दोपहर को खाने में एक-एक किलो फ्रूट, मटन हम्बरगर, दूध और चिकन सैंडविच, डिनर में लैम्ब रोस्ट, बेकन, फिश कटलेटस चिकन सूप, माडर्न ब्रैड, पोर्ट वाइन, विटामिन बी काम्पलैक्स शार्क लीवर ऑयल।
MENU
नाश्ते में इतनी सारी चीजें ? क्या यह सब हमको ही खानी हैं ?
और क्या ? फास्ट बॉलर बनने के लिये यह सब कुछ करना पड़ेगा।
तू फिक्र मत कर, हम यह सब पेट में पैक कर देंगे।
यह तो बोत हो गया याड़ी, खाया नहीं जा रिया है। पसीने छूट रिहे हैं।
खाओ-खाओ, वर्ना फास्ट बॉलर कैसे बनोगे ? तुम्हें जोश दिलाने के लिये मैंने यह तिरंगा झंडा भी मंगवा लिया है। इस तिरंगे के लिये लोग सिर कटवा देते हैं तुम इस नाश्ते का टिकट नहीं कटवा सकते ? तुम खाओ मैं झंडा ऊंचा रहे हमारा गाना गाता हूँ।
तिरंगे की शान को हम बट्टा नहीं लगने देंगे
शाबास ! ऐसे महान कामों के लिए देश प्रेम की भावना जगाना बहुत जरूरी है। अब से खाने की टेबल पर तिरंगा लहराता रहेगा। अब दोनों मेरे साथ नारा लगाओ।
भारत माता की
?
?
जे क्यों नहीं बोलते थम दोनों ? क्या देश प्रेम की भावना मर गई है थम दोनों में ? यह क्या इशारा कर रिया है तू हाथ से ? लिखने के लिये पैन और कागज चाहिये ? अभी लाकर देता हूं।


अगर हम जैं
का नारा लगायेंगे
तो हमारा आधा लंच बैरंग
बाहर आ जायेगा
२ महीने बाद–
डाइटिंग का कोर्स पूरा हो गया है। थम दोनों खूब मोटे ताजे ईद के वकरे जैसे वन गये हो। हमारी योजना का पहला चरण पूरा हुआ, अब तुमको वॉलिंग की प्रेक्टिस करनी है। आज ही चल कर ट्राई करते हैं तुममें कितना दम है।
आज से थम अपने को पिलपिल और सिलविल समझना बन्द कर दो। थम भारत के लिली और थामसन हो। थमारा नाम पिली और थामसिल होगा।
ओके वॉस!
थामसन और लिली की हम छुट्टी कर देंगे। म्हारे अन्दर ताकत ऐसे ही फड़फड़ा रही है जैसे पिंजड़े में जंगली पंछी फड़फड़ाता है। हम बैटसमैन पर ऐसे ही झपट्टा मारेंगे जैसे वाज चूहे पर झपट्टा मारता है।
यही मैदान ठीक रहेगा प्रेक्टिस के लिये। यहां कोई आदमी भी नहीं है। पहले किसी को पता नहीं लगना चाहिये। हम एकदम क्रिकेट जगत में धमाका करना चाहते हैं। सरपराइज देना चाहते हैं।
दोनों पहले एक साथ ही वॉल फेंकना, जिसकी गेंद जादा तेज आयेगी वह दोवारा अकेले ही गेंद फेंकेगा। हम स्पीडोमीटर फिट करके देखेंगे कि गेंद किस स्पीड से आती है। सौ मील की स्पीड से आती है या डेढ़ सौ मील की स्पीड से। पचास कदम का रन-अप ले लो थम। वैस हॉल और चार्ली ग्रिफिथ भी ५० कदम का रन-अप लेते थे। लिली और थामसन ४० कदम का रन-अप लेते हैं। फ्रेडी ट्रूमैन और साथम का मुझे पता नहीं है लेकिन लोग कहते हैं कि वह साठ कदम का रन अप लेते थे।
हम कौन से घट हैं? हम ७० कदम का रन अप लेंगे। We have to think big.



सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए।



तरुन कंसल—गाजियाबाद

● मैंने अपने पैसों से आइसक्रीम खाई ?

कमाल कर दिया। बाकी लोग तो लकड़ी के चमचे से और अपने मुंह से खाते हैं।

कु० राकेश शाह—बीना

● एक नेता अपने नौकर से : पैर तो थके ही हैं, आज बोलते-बोलते मेरा गला भी बैठ गया है ?

नौकर : पैर बाद में दबा दूंगा। लाइये पहले गला ही दबा दूं।

अशोक कुमार गर्ग--कोसी कलाँ

● पुजारी ने कहा, अब आप सब हाथ जोड़िये ?

कुइक फिक्स से या फेविकोल से।

मनोज कुमार कपूर—लखनऊ

● अब अब्दुल्ला शरीफ नहीं रहे ?

जमाना ही ऐसा आ गया है। एक अब्दुल्ला क्या, किसी का भी शरीफ रहना मुश्किल है।

दीपक कुमार अमित—सिरसा

● अमिताभ बच्चन की दीवार बहुत अच्छी है ?

केवल दीवार ? उसकी पूरी कोठी अच्छी नहीं है क्या ?

मोहन कुमार—आगरा

● मैंने डूबते हुए एक लड़के को बचा लिया ?

डूबते हुए कोई किसी को बचा ले, यह तो कमाल की ही बात है।

मंगटाणी प्रकाश—उल्लहास नगर

● डाक्टर साहब, मुझे खांसी की गोलियां दीजिये ?

जिन्हें खाते ही खाँसी हो जाये ?

अशोक वर्मा—इस्माईलाबाद

● बस में सामान बेचने वाला कह रहा था : ले लो भाई, यह सुरमा एक महात्मा के हाथ का बनाया हुआ है।

मतलब है, काजल वगैरा से नहीं बनाया है।

नारायन शर्मा—नाहरकटिया

● किसी ने मेरी जेब साफ कर दी ?

पूरी कमीज साफ करने के लिए क्या उसके पास साबुन की कमी थी।

तेजबीर मारधाह—जबलपुर

● रोगी को लाल दवाई से धोकर बर्तन में खाना देना चाहिए ?

रोगी को लाल दवाई से न धोया तो क्या कोई गड़बड़ हो जायेगी।

ओमप्रकाश चौधरी—रोहतक

● स्टेशन पर जाकर जनता पकड़ लेना ?

जनता की पकड़-धकड़ में काँग्रेस सरकार बदनाम हुई थी, यह मत भूलिये।

रवीप्रकाश जैन—बहराईच

● बस में बैठे दो व्यक्ति आपस में बातें कर रहे थे, 'इस सीट पर तो जनता पार्टी के चरणदास खड़े होंगे ?

उनकी बात का अनर्थ यह हुआ कि एक देहाती एक सीट छोड़कर बस में दूसरी सीट पर खड़ा हो गया।

प्रेमनाथ—पूना

● एक ग्राहक ने जल्दी-जल्दी में दुकानदार से कहा : जरा पहले मेरा बिल बना दीजिये ?

दुकानदार पहले ही चूहों के बिल से परेशान था।

राजेश कुमार भारद्वाज—दिल्ली

● बगीचे में अमरूद तोड़ने वाले एक बच्चे से दूसरा बच्चा कह रहा था : राकेश मुझे भी तोड़ दो ?

वह क्या तोड़ेगा, माली आ गया तो दोनों को ही तोड़ देगा।

कृष्ण लाल बतरा—लुधियाना

● ग्राहक : भाई साहब मेरे नाप के जूते दीजिए ?

दुकानदार : आपके पांव के नाप के जूते तो मिल सकते हैं। आपके नाप का जूता तो बस वही एक है जो दुकान के बाहर लटक रहा है।

राजामागोरी—उदयपुर

● देखो विकी अगर तुम मेहनत से काम करोगे तो भगवान तुम्हें अवश्य फल देगा ?

लगता है भगवान भी किसी फल के वृक्ष से कम नहीं है।

उन्नी कृष्ण—जोधपुर

● एक साहब चुनाव में खड़े एक सज्जन की तारीफ में भाषण देते हुए कह रहे थे : भाइयों ! आप तो जानते ही हैं कि आपके इलाके में केवल प्रशा शर्मा भले आदमी हैं ?



ऐसे तो वोट मिल लिया भाई केवल वही एक भले आदमी हैं तो वोट देने वाले कैसे हुये ?

राकेश कुमार भारद्वाज—कृष्णा नगर

● जीव विज्ञान के छात्र मेंढ़क काट रहे थे तभी प्रोफेसर साहब बोले, बच्चो मेंढ़क का हार्ट पेंचर मत कर देना।' एक लड़का बोला, 'सर मेरा तो हार्ट पेंचर हो गया है ?

विद्यार्थी का हार्ट ही पंचर हुआ है या उसके मेंढ़क का।

अर्थ-अनर्थ
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

आपके पत्र

दीवाना अंक ३८ मिला। मुखपृष्ठ बहुत ही सुन्दर लगा। दीवाना पंचतंत्र बहुत ही अच्छी लगी। अन्य स्तम्भ भी अच्छे लगे। खून का तूफान बहुत ही मनोरंजक है। आप से अनुरोध है कि समय-समय पर दीवाना के विशेषांक निकालें और साथ में दीवाना डायरी आदि जैसे उपहार दें।

राजीव ढल—मुरादाबाद

एक सप्ताह के इन्तजार के बाद 'दीवाना' अंक नं० ३५ प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ मनोहर था। इस अंक में मोटू पतलू, मदहोश, सिलबिल-पिलपिल, बीसवीं सदी का आदमी मजेदार रहा। अभिनेत्री उई दैया के रिश्तेदार ने भी मुझे खूब हंसाया। इस तरह की सामग्री अन्य अंकों में देते रहेंगे यह मेरी आशा है।

मेरा विचार मानिये तो 'फैन्टम' दो पेजों में कर दीजिए। इससे पत्रिका निखरेगी। अभिनेता जितेन्द्र का लेख छापने का कष्ट करें। **जोगेन्द्र प्रसाद—लगरटोली**

दीवाना का अंक ३८ प्राप्त होते ही मन फूला न समाया! मुखपृष्ठ देखते ही हंसी का फव्वारा छूट पड़ा। दीवाना ही एक ऐसी पत्रिका है जो सब पत्रिकाओं से अलग है। दीवाने के जो स्तम्भ हैं उनकी तो शान शौकत ही निराली है! खून का तूफान नामक कहानी को थोड़ा और ज्यादा पृष्ठ का कर दें ताकि रोचकपन उसमें आता रहे! मोटू पतलू की जासूसी कहानी देने की कोशिश करें। **शोक छाबड़ा—रोहतक**

दीवाना का अंक ३६ मिला। इसमें सबसे बढ़िया रोचक व हास्य वाला मोटू पतलू रहा। आशा है आप आगे से भी मोटू पतलू के कारनामे हास्य वाले देंगे। इसके अलावा मुखपृष्ठ चिल्ली का सिगरेट हसीना के मुँह से सुलगाना भी अच्छा लगा व सिलबिल पिलपिल, पंचतन्त्र, सत्य पर विचित्र, बात बेबात की, परोपकारी व खून का तूफान, काफी सराहनीय हैं।

धर्मवीर मक्कड़—पानीपत

दीवाना का ३७वां अंक प्राप्त हुआ। पढ़कर मजा आ गया, खून का तूफान कहानी धारावाहिक होते हुए भी रोचक लगी। इस अंक में ही 'काका के कारतूस, मोटू पतलू, फैन्टम और डायना का अपहरण आदि मनोरंजक लगे।

अगर दीवाना के दो पृष्ठों की फिल्मी अभिनेत्रियों के स्थान पर कुछ ज्ञानवर्धक पहेली या बातें छापी जाएं तो हमें और अधिक जानकारी होगी। हमारी तरफ से दीवाना को हार्दिक शुभकामनाएं।

एस० एम० वसीम—लखनऊ

पाठकों का प्यारा-प्यारा दीवाना अंक ३७ अपने आप में नई सामग्री लिए आज मिला, चटपटी सारी सामग्री पढ़ डाली। हमारे लिए दीवाना ही एक ऐसा दोस्त है जिसका हमें सप्ताह भर बड़ी बेचैनी से इन्तजार करना पड़ता है। इस अंक में भारद्वाज जी के करकमलों द्वारा तैयार की गई रंगारंग चित्र कथा 'मोटू पतलू ००७' ने हंसा-हंसाकर दीवाना बना दिया। 'राजनीति का फिल्मी कचूमर' बेहद पसन्द आया। कृपया फिल्म पैरोडी को महीने के चौथे अंक में ही प्रकाशित किया करें।

एस० मन्जूर हसन 'कादरी'—बीकानेर

अंक ३६वां प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ पर चिल्ली की हसीना से मुलाकात हुई। प्रेम पत्र, अर्थ-अनर्थ, काका के कारतूस, खेल-खेल में आदि काफी रोचक रहे। आपके इस अंक में 'दैनिक फिलिमस्तान' भी काफी रोचक एवं प्रशंसनीय था। 'सत्य पर विचित्र' नामक फीचर काफी रोचक रहा।

अवध किशोर श्रीवास्तव—जबलपुर

दीवाना के लिए मैं बुधवार से अपने एजेंट का सिर खा रहा था। मैं रोज चक्कर लगाता रहा किन्तु दीवाना का नया अंक ३८ मुझे शुक्रवार को मिला। इस अंक की सारी सामग्री अच्छी लगी यह अंक इतना अच्छा था कि इसकी बड़ाई जितनी की जाए कम है।

श्री भारद्वाज जी की कलम से बनी चित्र कथा मोटू पतलू अत्यन्त अच्छी लगती है। अंकल जी आप 'दीवाना' को इतना अच्छा छापते हैं कि इसको पढ़ते हुए दिल नहीं भरता, बस पढ़ते ही जाओ। अतः अच्छी सामग्री के लिये बधाई स्वीकार करें।

विनोद कुमार भाटिया—मेरठ

अभी तक चिल्ली को मैंने असंख्य रूपों में अवतरित होते हुए देखा है। कभी बूढ़ा, कभी जवान, कभी बच्चा। अंक ३७ में चिल्ली का रूप देखकर हंसी दबा न सका। मैं चिल्ली जी से अनुरोध करता हूं कि वे बिहार के मुख्यमंत्री श्री कपूरी ठाकुर को जल्द से जल्द प्रेम-पत्र लिखें।

रवि रंजन—सासाराम

दीवाना ३७ अंक प्राप्त हुआ। अन्य अंकों की अपेक्षा यह काफी मनोरंजक तथा हास्यप्रद था। इसमें फिल्मी धमाके, अर्थ-अनर्थ, अच्छी खबर बुरी खबर, खेल-खेल में, मोटू पतलू तथा रिश्ते शिकायतों के, कहानी काफी हास्यप्रद थी। **सुनील खेर—जबलपुर**

दीवाना का अंक नं० ३७ मिला। हर अंक की तरह यह अंक भी अच्छा था! इस अंक में चिल्ली लीला, अर्थ अनर्थ, काका के कारतूस बहुत अच्छे लगे! इस में से विशेष तौर का पर डा० भटका चमत्कारी इलाज पढ़कर दिल बहुत खुश हुआ! इस प्रकार सब सामग्री एक से बढ़कर एक थी।

आशा है कि दीवाना पत्रिका इसी तरह प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहेगी और इसी प्रकार यह पत्रिका भविष्य में हमारा मनोरंजन कराती रहेगी।

परमजीत सिंह—रामनगर करनाल

दीवाना का ३६वां अंक प्राप्त हुआ। हर अंक कि तरह यह अंक भी बहुत मजेदार था, दीवाना हास्य पत्रिकाओं का सम्राट है, इस अंक में 'पिलपिल-सिलबिल' बेहद पसन्द आये इस अंक में आपने 'दैनिक फिलिमस्तान' देकर दीवाना में चार चाँद लगा दिये, इसके कारण आप बधाई के पात्र हैं। मुझे आप से बस एक अनुरोध है, वह यह कि आप प्रयोगिताओं की तिथि बढ़ा देने कि कृपा करें, 'बड़ी कोफ्त होती है, जब' तथा 'वह दिन दूर नहीं जब' मजेदार थे, दीवाना के सभी कलाकारों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई। अगले अंक का बेकरारी के साथ इन्तजार है।

मनोज गिरि—हजारी बाग

मोटू-पतलू का जहाज

हाईजैक

हमारा चेलाराम दी ग्रेट, एक खतरनाक केस की छानबीन के लिये बैंकाक गया हुआ है। वहां इस डिटैक्टिव पर क्या बीत रही है, जरा आँखें फाड़ कर देखिये ''! उसका बोलने वाला उल्लू उसके साथ है।






जो बारूद से धातु टकरानेपर विचलित हो जाती हैं। बीस फिट की दूरी तक इनका असर बहुत हानिकारक है। इस दूरी के बीच अगर कोई तुम पर
गोली चलाएगा तो बारूद और धातु के टकराते ही पिस्तौल की गोली बिजली की भारी वोल्टेज में बदल जाएगी और बिजली के जबरदस्त झटकें के कारण गोली चलाने वाला खुद अधमरा हो जाएगा।
बिजली के झटके से अभी जो हुआ है वह तुमने देख ही लिया है।
अब जैसा कि हमने बताया है, तुम्हें उस खतरनाक गेंग के अड्डे पर जाना है। हमारे साथी तुम्हारी सहायता के लिये तैयार रहेंगे।
पुलिस स्टेशन से निकल कर चेलाराम बेंकाक की एक सड़क से गुजर रहा था, कि उसकी कलाई पर लगी घडी के ट्रांसमीटर ने अजीब से सिगल देने शुरू कर दिये!
बिप......
बिप......
बिप
चेलाराम ने ट्रांसमीटर की सुई सैट की तो उसकी आवाज सुन कर वह चौक गया।
हैलो! हमारा जहाज हाईजेक कर लिया गया है। और हमें बेंकाक हवाई अड्डे पर फोर्सलेंडिंग के लिए मजबूर किया जा रहा है।
Three hijackers holding 100 passengers are foring airlincer J-4 to land on Bankak Airport.
उस जहाज में मोटू-पतलू भी अपने साथियों के साथ टोकियोजा रहे थे
खबरदार! यह जहाज हाईजेक कर लिया गया है। सब पैसेंजर अपनी-अपनी सीटों पर बैठे रहें, किसी ने हमारे काम में दखल देने की कोशिश की तोमौत के घाट उतार दिया जाएगा।



हमारी मर्जी के बगैर कोई अपनी सीट से हिला तो गोली उसके सीने से पार होगी ।
हैल्लो ... टावर ! एयर लाईनर का कंट्रोल अब हमारे हाथ में है । हम एयर स्टिप पर उतर रहे है ।
इस मैसेज के आते ही कंट्रोल टावर पर सब के होश उड गये थे ।
किसी ने हमसे ३०० गज के अन्दर आने की कोशिश की तो उसे गोली से उडा दिया जाएगा । हमारे पास इतना एमुनिशन है, कि हमारी किसी भी बात के विरोध करने पर हम पूरे जहाज को बारूद से उडा देंगे ।
J-4
थोड़ी ही देर बाद यह समाचार हर रेडियो स्टेशन से जगह- जगह प्रसारित किया जा रहा था ।
एयर लाईनर जे-४ हाईजैक कर लिया गया
हाईजैक करने वालों की माग । यदि उन्हें २० लाख डालर न दिये गये और उनके तीन कैदी न छोडे गये तो जहाज को यात्रियों समेत बम से उडा देंगे ।



ग्रौर हमारे लिये खाने का प्रबन्ध करो। खाना लाने के लिये हम अपना आदमी भेज रहे हैं। कोई गड़बड़ हुई तो पूरा जहाज गोलों से उड़ा दिया जाएगा।
यह एयर होस्टेस कुछ चालाकी कर रही थी।
धड़ाम।
जान बच गई। शुक्र है गोली बाजू पर लगी है।
ग्रौर तुम्हारी छाती पर लगेगी मोटे करेले,
ग्रगर तुमने ग्रपनी जगह से हिलने की कोशिश की।
भगवान करे यह मोटा जल्दी कोशिश करे
तू क्या मूंछ हिला रहा है चूहे ?
खाना लाने के लिये एयर पोर्ट किसे भेजना है ?
तुम्ही जाग्रो ग्रौर ग्रपने साथ इस बेंगन को भी ले जाग्रो सर पर खाना रख कर लाने के लिए। कोई गड़बड़ हो तो पहली गोली इसी के मारना।
हमारे ग्रादमी खाना लेने के लिए ग्रा रहे हैं। हमारे मीनो के ग्रनुसार इन्हें खाना दे दो। कोई गड़बड़ हुई तो जहाज खील-खील करके उड़ा दिया जाएगा।
जो सामान ग्रापने बनाया वह सब कंटीन की किचन में तैयार है. ग्रन्दर जाकर ले लीजिये।
हमारे साथ किसी प्रकार की भी चालाकी की गई तो जहाज में सवार एक भी यात्री की जान नहीं बचेगी।
चेलाराम ग्रब तक कोई बाकायदा स्कीम तो नहीं बना पाया था, पर हाईजैकर से भेंट करने के लिए उसने यह उचित समझा था कि वह किचन में घुस जाए।
ग्रगर ग्राप बुरा न मानें तो ग्रापका खाना मैं ले चलूं ?
नहीं, हमारे पास ग्रादमी है।


मैं क्या आदमी नहीं हूं। मुझे अपने साथ ले लिया तो क्यामत आ जाएगी तुम्हें ?
मुंह सम्भाल कर बोलो, यह कौन-सा तरीका है बात करने का ?
तुम्हारे पास इतनी अक्ल कहां है, जो मेरा बात करने का तरीका समझ सको।
तुम बक रहे हो !
बक तुम रहे हो।
अभी बताता हूं मैं क्या कर रहा हूं ?
हाईजेंकर ने आव देखा न ताव, जेब से पिस्तौल निकाल कर चेलाराम पर गोली चला दी।
बंग
पिस्तौल चलते ही चेलाराम की जैकेट में लगे एटमिक यंत्र ने गोली की शक्ति को बिजली की करंट में बदल दिया...
मरा नहीं है। हो सकता है डाक्टरी चिकित्सा से बच जाए। मैंने ऐसा नहीं सोचा था। पर ऐसा हो ही गया है तो मुझे इसके कपड़े पहन कर अपना काम करना चाहिए।
हाईजेंकर किचन में गया था। बाहर नहीं आया, तुम खाना ले जाने के लिए उसके साथ आए हो। जाओ, अन्दर से खाना ले आओ।
यहां से भाग निकलना तो आसान नहीं है। क्यों न मैं हाई-जेंकरों को पटा लूं।



आगामी अंक में इन हाईजैकरों के कारनामे आपको हंसा- हंसा कर पूरा दीवाना बना देंगे ।

छुट्टन और मिट्ठन

किताब पढ़ कर कोई किसी बात का गलत मतलब निकाल ले तो यह एक अलग बात है पर छुट्टन और मिट्ठन यह मानने को तैयार नहीं हैं कि किताबें पढ़ कर कोई कुछ नहीं सीख सकता। अंतरिक्ष में पहुंचने वाले स्पेसशिप से लेकर कमीज का बटन तक बनाने के तरीके आज किताबों में मौजूद हैं। बात इतनी है कि कोई इनका मतलब समझ सके। छुट्टन और मिट्ठन मतलब समझने में कितने उस्ताद हैं इस पर आपने शक किया तो हम कहेंगे आप बहुत मतलबी हैं।

इस वर्ष अधिक वर्षा के कारण कीड़े-मकोड़े बहुत पैदा हो गये हैं। अब देखिये छुट्टन और मिट्ठन किताबें पढ़ कर कीड़ों-मकोड़ों के मिजाज कैसे ठिकाने लगा रहे हैं।





आगामी अंक में छुट्टन और मिट्ठन के छोटे और मीठे हंगामे देखना न भूलिये ।

प्र० : बालकों के कर्णभेदन की परिपाटी क्यों है ? तनवीर अहमद—'बुन्दो', आसाम

उ० : बालकों के कान छेदने से अंड वृद्धि होने की संभावना नहीं रहती। अंड वृद्धि रोकने के लिए जहाँ और भी अन्य उपाय हैं उनमें एक उपाय यह भी है। भविष्य में होने वाले रोग को रोकने के लिए यह परिपाटी चली आ रही है।

अर्थात शंख के ऊपर (कनपटी के ऊपर) कान के निम्न भाग में सीवन (जोड़) कर अंग के व्यत्यय से नस को बींधने से अण्ड वृद्धि निवृत्त हो जाती है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

प्र० : सूर्य में इतनी गर्मी और आग कहाँ से उत्पन्न होकर आती है ?

कु० जेड़रानी—भागलपुर

उ० : सूर्य ब्रह्मांड में पाया जाने वाला अनेकों तारों जैसा ही एक तारा है। यह भिन्न-भिन्न गैसों से बना एक बहुत बड़ा गोला है, जो कि पृथ्वी से लगभग एक लाख गुना बड़ा है। यह पृथ्वी से केवल ९ करोड़ ३० लाख मील दूर है जबकि दूसरा सब से पास माना जाने वाला तारा एक अरब मील दूर है। सूर्य की बाहरी सतह का तापमान ६०००°C है, वैज्ञानिकों का अनुमान है कि सूर्य के भीतर का तापमान २०,०००,०००°C है।

सूर्य में मुख्य गैसें हीलियम और हाइड्रोजन हैं जो कि ३:१ के अनुपात में हैं। सूर्य के अन्दर की परमाणु प्रतिक्रिया उसकी इतनी अधिक ऊर्जा और गर्मी के उत्पन्न होने का कारण है। सूर्य के बीच के भाग को एक बहुत बड़ा परमाणु प्रतिकारी माना जा सकता है। जो कि हाइड्रोजन को बहुत बड़ी मात्रा में हीलियम में बदलता रहता है जिससे चारों ओर गर्मी और ऊर्जा प्रसारित होती है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

प्र० : मनुष्य को हिचकी क्यों आती हैं और लगातार क्यों आती है ?

विभा गुप्ता—भिवानी

उ० : मनुष्य को हिचकी आना कोई रहस्यमय बात नहीं है। इससे बहुत से अंधविश्वास जुड़े हुए हैं जो कि बिल्कुल निराधार हैं। हिचकी मनुष्य के शरीर को किसी कार्य के परिणाम से अपनी रक्षा करने के लिए आती है जैसा कि आप जानते हैं हमारे शरीर में बहुत सी प्रतिक्रियायें होती रहती हैं। प्रति-

क्यों और कैसे

क्रिया शरीर के किसी भाग में हुई क्रिया के कारण होती है। एक कार्य की प्रतिक्रिया सदा एक सी ही होती है। नसें हमारे शरीर में एक दूसरे से ऐसे जुड़ी हैं कि उसे नसों का जाल कहा जा सकता है। कभी-कभी बहुत गरम खाना खाने से किसी विशेष नस में जलन पैदा हो जाती है और हिचकी आने लगती हैं। या कभी-कभी पेट पर वायु के दबाव से जब तनुपट ऊपर को उठ कर फेफड़ों पर दबाव डालता है तब भी हिचकी शुरू हो जाती हैं। वायु का दबाव बार-बार तनुपट को उठाता है, फेफड़ों पर दबाव से बार-बार हिचकी आती है। जब तक शरीर का विकार पूर्ण रूप से दूर न हो जाये हिचकी आती रहती हैं।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

प्र० : साईकिल का निर्माण कब और कहाँ हुआ व किसने किया ?

बीलाल अहमद कादरी 'बेताब'—बीकानेर



उ० : साईकिल का निर्माण सबसे पहले १८६५ में एक फ्रांसी लालमेंट नामक व्यक्ति द्वारा किया गया था। इससे पहले डेंडी होर्स नामक एक साईकिलनुमा चीज का निर्माण हुआ था। परन्तु डेंडी होर्स बहुत मंहगा था और इतना प्रयोगात्मक भी न था। एक व्यक्ति श्री मेकमिलन ने इस डेंडी होर्स में पैडल और एक्सल लगाये। इस प्रकार इसे काफी तीव्र गति से चलाया जा सकता था। मेकमिलन महाशय इस साईकिल पर सवार हो कर इतने तेजी से सड़क पर गये कि उन्हें क्रोधोन्मत्त चालकी के लिए बन्दी बनाया गया। शुरू में साईकिल का ढांचा लकड़ी का और टायर लोहे के होते थे। १८६८ में रबर के टायर और हल्की धातु का ढांचा बनाया गया। इस समय साईकिल का आगे का पहिया बड़ा और पीछे का उससे बहुत छोटा बनाया जाता था। एक समय पर तो आगे का पहिया पांच फुट व्यास का और पीछे का केवल १२ इंच व्यास का भी बनाया गया। इसमें बैठने की गद्दी अगले बड़े पहिये के ऊपर होती थी इसलिए चलाने वाले के गिरने का बहुत डर रहता था।

१८८५ में साईकिल में सुधार होते-होते लगभग आधुनिक साईकिल का रूप ले लिया।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

प्र० : ज्वालामुखी कैसे बनते हैं, व भूकम्प कैसे आते हैं ?

सुखजीत सिंह बिरदी—जमशेदपुर

उ० : जैसा कि आप जानते हैं, पृथ्वी भीतर से गरम है। जितना ही पृथ्वी की सतह के अन्दर जाते हैं तापमान उतना ही बढ़ता जाता है। उदाहरणतः पृथ्वी के २० मील भीतर का तापमान लगभग १००० से १,१००० सेंटीग्रेड है। गरमी के फलस्वरूप भीतर की अधिकतर चट्टानें पिघल जाती हैं। जब चट्टानें पिघलती हैं तो उन्हें अधिक स्थान की आवश्यकता होती है। पृथ्वी के कुछ हिस्सों में नये (हजारों वर्षों की गिनती में) पर्वत बने होते हैं। इन नये पर्वतों के नीचे और आसपास पृथ्वी के और स्थानों की तुलना में पृथ्वी का दबाव कम होता है, ये पृथ्वी की सतह के एक प्रकार के दुर्बल स्थल माने जाते हैं। पिघली हुई चट्टानें इन्हीं स्थानों के नीचे इकट्ठी हो जाती हैं और जब पृथ्वी के भीतर का दबाव बाहर की सतह के दबाव से अधिक हो जाता है तो पिघली हुई चट्टानें भीतरी गैसों के साथ मिल कर ऊपर को उठती हैं और सतह को तोड़ कर बाहर आ जाती हैं। और ज्वाला मुखी बन जाता है।

भूकम्प का कारण भी पृथ्वी की सतह से तथा भीतर की हलचल ही हैं। पृथ्वी की सतह सब जगह इकसार नहीं है, कहीं-कहीं इसमें बहुत बड़ी-बड़ी दरारें तथा अन्य विकार छुपे हुए होते हैं। जब दरारों के दोनों ओर की चट्टानें एक दूसरे से पृथ्वी की भीतरी हलचल के कारण रगड़ खाती हैं तो पृथ्वी में तरंगें पैदा होती हैं जिससे पृथ्वी हिलती है। ये तरंगें हजारों मील तक फैल जाती हैं इन्हें हम भूकम्प कहते हैं।

क्यों और कैसे ?
'दीवाना' ८-बी, [illegible]
नई दिल्ली [illegible]

खेल खेल में

एम॰ अंनुल हसन—जामाडोबा
प्र० : [illegible] के शोले को बुझाने के लिए [illegible] का प्रयोग करते है तो प्यार की आग बुझाने के लिए ?
उ० : वैसे तो यह प्रश्न हमारे कालम का नही है. फिर भी यदि मान लिया जाये कि प्यार भी खेल है तो हम यही कहेंगे कि प्यार व्यार का चक्कर छोड कोई असली खेल खेलना शुरू कीजिये। चैम्पियन बनकर अपना व देश का नाम रोशन करें। फिर हजारों लैलायें आपकी फैन बन जायेंगी। आप आग लगाते जाइये बुझाने की चिन्ता न करें। आग खुद ही अपने बुझने का सामान ढूंढ़ लेती है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

हरप्रीत सिंह साहनी—पटियाला
प्र० : क्या भारत की क्रिकेट टीम में कोई तेज गेंदबाज आयेगा अगर आयेगा तो कौन ?
उ०: कुछ-कुछ उम्मीद तो है। इस बारे में हम दीवाना के पिछले अंक में छाप चुके हैं कि सुना है इस समय तीन गेंदबाज प्रशिक्षण ले रहे हैं जिनसे उम्मीद है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

सुधीर चौबे—श्रीकनगांव
प्र० : मैं उच्च स्तर का क्रिकेट खिलाड़ी बनना चाहता हूं। मेरी उम्र १४ साल है। क्या मैं खिलाड़ी बन सकता हूं ?
उ० : कोशिश करके देखिये केवल चाहने से कुछ नहीं होगा।

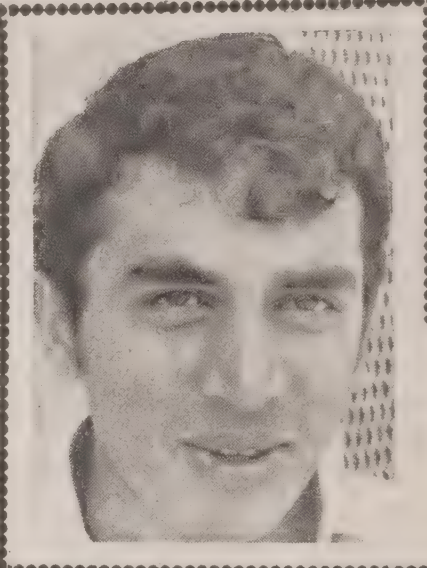
☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अनिल कुमार पाल—खुसरो (बेरमो)
प्र० : भारत के भूतकाल में आल राऊण्डर कौन था ?
उ० : आबिद अली।

नैश की दुर्गति

एम. नैश जिसके ओवर में गैरी सोबर्स ने छः छक्के लगाकर विश्व रिकार्ड स्थापित किया था। उसी बेचारे नैश के ओवर में हाल में ही फ्रैंक हेज ने ३४ रन बनाये। इस क्रम में ६-४-६—६-६-६ यानि पांच छक्के और एक चौका। जब लोगों ने मजाक में उससे पूछा कि तुम्हें दिन में तारे नजर आए या नहीं। उसने मासूमियत से उत्तर दियां कि जब सोबर्स ने छः छक्के मारे थे तो मुझे तारों के साथ चांद नजर आया था। उसके बाद दिन तो दिन मुझे रात को भी तारे नजर नहीं आते।

पियूष माहेश्वरी—अमरोहा
प्र० : क्या जहीर अब्बास अब भी पाकिस्तान के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी हैं।
उ० : अब भी हैं और कई वर्ष और श्रेष्ठ खिलाड़ियों में बने रहेंगे।



एस. मंजूर हसन 'कादरी'—बीकानेर
प्र० : भारतीय क्रिकेट टीम का सर्वाधिक स्कोर कितना है, वह कब और किसके विरुद्ध बना ?
उ० : ५३६ रन। १६६०-६१ में पाकिस्तान के विरुद्ध मद्रास में।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अनिल कुमार हरिव्यासी—रामनगर
प्र० : इस वर्ष आस्ट्रेलिया के दौरे में भारतीय टीम का कप्तान कौन होगा ? और क्या विशन सिंह बेदी को कप्तान बनने के लिये और कोई मौका मिलेगा या नहीं।
उ० : क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड वालों की मर्जी है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

बद्रीप्रसाद 'अन्जान'—गोलाबाजार
प्र० : अमेरिका के साथ भारत ने कब और कौन सा खेल खेला ?
उ० : पहले हाकी खेला था ? अब केवल टेनिस खेलने हमारे खिलाड़ी वहां जाते हैं।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

संजय कुमार वर्मा—वीरपुर
प्र० : क्या संसार में क्रिकेट का खेल बहुत लोकप्रिय है ?
उ० : क्रिकेट कुछ ही देशों में प्रचलित है। वहां काफी लोकप्रिय है। फुटबाल विश्व का सर्वाधिक लोकप्रिय खेल है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

आनन्द खंडेलवाल—सासाराम
प्र० : हाल ही में भारत और इंग्लैंड के बीच जो मैच हुआ था उसमें विश्वनाथ जम नहीं पाये। लोग यह भी कहते हैं कि उन्हें कैप्टन बनने की लालसा था। इसीलिये वह जल्दी आऊट हो जाते थे ? क्या यह सही है ?
उ० : नहीं, विश्वनाथ कप्तानी की होड़ में नहीं हैं। उन्होंने तो कर्नाटक की भी कप्तानी नहीं मांगी।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अशोक कुमार ठाकुर—गोटेगांव
प्र० : भारत और इंग्लैंड के बीच जो क्रिकेट टैस्ट मैच हुये थे उसमें भारत की हार का प्रमुख कारण क्या था ?
उ० : बल्लेबाजी की कमजोरी के कारण।

अमर कुमार श्रेष्ठ 'मन्जू'—नेपाल
प्र० : क्या सुनील गावस्कर फिल्मी दुनिया में चले गये हैं ?
उ० : जी नहीं, वह क्रिकेट में ही हैं। उनके जीवन में क्रिकेट का स्थान प्रथम है बाकी सारी बातें बाद में आती हैं।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

विनोद कुमार वर्मा—हापुड़
प्र० : दुनिया भर में चोटी के बल्लेबाज की उपाधि किसे मिली हुई है।
उ० : आस्ट्रेलिया के डॉन ब्रैडमैन को।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

सुभाष कुमार—लुधियाना
प्र० : बेदी और अंडरवुड की तुलना की जाये तो कौन अच्छा बॉलर है ?
उ० : बेदी ग्रेट है लेकिन वर्षा के बाद की गीली पिच पर जब स्थिति अनुकूल होती है तो अंडरवुड का सानी नहीं है। बेदी को किसी ऐसी विशेष परिस्थिति की जरूरत नहीं पड़ती।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२



फैण्टम और डायना की शादी
वह आ गये !
साथ में गोश्त भी है ।
मुझे मारने आया था बेचारा खुद ही...
ओह ! बेचारी लड़की ।
क्या तुमने उस बारे में बात की ?
हम बहुत व्यस्त थे, जाओ आराम करो ।
घने जंगलों में, बन्दर जाति के बौने लोगों ने डियाना के सम्मान में एक शानदार दावत दी ।
आह ! यहां रहना कितना अच्छा लगता है ! यहां की हर चीज कितनी प्यारी है ।
मुझे शक है क्या वह सचमुच यहां रहना पसन्द करेगी ?
शायद इस दुनिया में यह जगह सबसे सुहानी और शांतिमय है ।
यह खोपड़ी वाली गुफा बहुत अच्छी लगती है यह अपने किस्म की अकेली ही है ।
अच्छा !
पिछली चार शताब्दी से तुम्हारे पूर्वजों के यह ग्रंथ, क्या मैं इन्हें पढ़ सकती हूं ?
श श श उससे पूछो ।
श श श अभी पूछूंगा ।
तुम्हारे पूर्वजों की यह पोशाकें बिलकुल तुम्हारी जैसी हैं । क्या यह छोटे कद का था...?
जब उसके जुड़वां भाई "फैन्टम" जख्मी हो गये तब उसने उनकी जगह ली ।
मैं इसे पहन कर देखूं ?
कैसी लगती हूं मैं ?
बहुत अच्छी !
वाह !



रंग भरो प्रतियोगिता



नाम ----------------
पता ----------------
---------- आयु ------
पहुंचने की अंतिम तिथि २६ अक्तू. 77

यह प्रतियोगिता दो भागों में विभाजित है । पहला भाग ८ साल की आयु से १४ साल की आयु तक, और दूसरा भाग १५ साल की आयु से ऊपर तक, अपनी आयु व पता सही-सही लिखें । आप चाहें तो एक से अधिक चित्र में रंग भर कर भेज सकते हैं। हर कूपन में नाम, पता व आयु लिखना न भूलें । दोनों भागों में पहला, दूसरा व तीसरा इनाम दिया जाता है ।

एक दल 'बावने' यारा

शरद जोशी

जैसे ही वे तू-तू मैं-मैं भरे प्यारे दिन लौटे, यहाँ-वहाँ राजनैनिक ले-दे मचने लगी, मैं एक नया दल बनाऊंगा जो न दाएं होगा, न बाएं, न बीच में, बल्कि ऊपर होगा। सड़क से कोई दस बीस फिट ऊपर जहाँ यह बात बेमानी होगी कि ग्राप कहाँ हैं या जहां है वहाँ क्यों है ग्रथवा जहां नहीं है वहां क्यों नहीं हैं। ऊपर हवाई यात्रा में जैसे ट्रैफिक नियम या नियम तोड़ने की नागरिक-स्वातंत्र्य में महमहाती जिद नहीं होती, उसी तरह बंदे का दल परम स्वतन्त्र होगा नीति निर्धारण के मामले में। इस हद तक कि हमारे लिए नीतियाँ बनाना या उस विषय में सोचना भी कोई जरूरी नहीं होगा। ग्राप मेरा व्यक्तित्व देख रहे हैं ना? बात समझने की कोशिश नहीं करता, कोशिश करने पर जिसे समझ नहीं ग्राती, समझ ग्राने पर जिस पर कोई फर्क नहीं पड़ता। इसमें थोड़ी उदारता, थोड़ी निष्क्रियता ग्रौर बड़बड़ाहट मिला लीजिए जिसका दल के लाखों सदस्यों से गुणा कीजिए तो जो नतीजा या तसवीर बनेगी वह मेरा राजनैनिक दल होगा जिसका राजनीति ग्रथवा दलबंदी से कोई सरोकार नहीं होगा। मेरे ख्याल से वही सही ग्रर्थों में भारतीय पार्टी होगी।

मैं बहुत चिंतन मनन के बाद इस परम नतीजे पर पहुंचा हूं। ग्राजकल उसका समय भी खूब मिल रहा है। यों भी मैं बरसात में ज्यादा बाहर नहीं निकलता। देश को परिवार या परिवार को देश समझ, एक ही मतलब है, घर पर हो रहता हूं। जो भी हो इधर मैंने उपलब्ध समय का सदुपयोग कर कुछ सोचा है। बंबईया ग्रन्दाज में कहूं तो मैंने खूब सोचा, खूब सोचा, खूब सोचा, खूब सोचा। (चार बार कहने से सोच की गहराई प्रकट होती है। गुण की सूचना मात्रा से।) बस मौके की प्रतीक्षा है। जैसे ही मौसम खुला ग्रपना दल बनाऊंगा। मैं कई राजनैतिक दलों में रह चुका हूं ग्रौर उस दल के हितों को दृष्टिगत रखते हुए मैंने उसे छोड़ दिया है। जब छठी-सातवीं में पढ़ता था तब पन्द्रह-बीस दिनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में गया। कबड्डी वहीं सीखी। उज्जैन में ग्रोवरब्रिज के पास जहां ग्राजकल सिनेमा है, शाखा लगती थी। ग्रार० एस० एस० को तो ग्राप जानते हैं; वे जहां भी थोड़ी सी जगह मिली, शाखा लगाने लगते थे। उन कुछ दिनों में मैं चार पांच लड़कों से लड़ लिया। वे सब ग्रार० एस० एस० के थे। मुझ जैसे दुबले-पतले लड़के के पास इतनी कम ग्रवधि में इतने ग्रधिक लड़कों से भिड़ जाने का प्रावधान नहीं होता पर मैं था कि मान नहीं रहा था। एक 'ग्रनुशासन-धर्मी' संगठन के लिए मैं प्राब्लम चाइल्ड था जिस पर सारे 'बौद्धिक' बेग्रसर होते थे। वे घबरा गए ग्रौर मेरे विषय में ग्रंतिम ठोस कदम उठाने की दृष्टि से विचार करने लगे। तभी मैंने महसूस किया कि वालीबाल ग्रच्छा खेल है। मैं शाखा की बजाय वालीबाल खेलने जाने लगा। इससे ग्रार० एस० एस० ग्रौर वालीबाल दोनों लाभ में रहे।

मेट्रिक के ग्रासपास मैं कम्युनिस्ट होने लगा। मार्क्सवाद को लेकर कुछ इतनी जरूरत से ज्यादा खुशफहमियां बन गयीं कि मैं स्वयं को खुले ग्राम कम्युनिस्ट कहता फिरता था ग्रौर मेरी कई कई हरकतों से परेशान कम्युनिस्ट पार्टी निरंतर इसका खंडन करती थी कि मैं कम्युनिस्ट हूं। वे इन्कार करने से बाज नहीं ग्राते, मैं स्वयं को कहने से बाज नहीं ग्राता। स्थानीय कम्युनिस्ट पार्टी ने कुछ दिनों मार्क्स लेनिन का ग्रध्ययन करना छोड़ केवल मेरा ग्रध्ययन किया ग्रौर वे एक साथ इतने नतीजों पर पहुंचे कि यह संभावना विकसित हो गई कि पार्टी कई दलों में बंट जाए। उन दिनों माग्रो का नाम इतना उभरा नहीं था ग्रौर पार्टी को ग्रलग-ग्रलग करवाने का ऐतिहासिक दायित्व मुझ पर ग्राने वाला था। यदि ग्रौर ग्रधिक दिनों मैं स्वयं को कम्युनिस्ट कहता फिरता ग्रौर मेरे परस्पर विरोधी मंतव्यों पर (वास्तव में वे उस एकात्मधारा को पकड़ने में ग्रसमर्थ रहे जो मेरे ग्रन्तर का स्थायी भाव है) कम्युनिस्ट



पार्टी विचार चालू रखती तो उसका विभा-अधिक दलों में होता। वे इस खतरे को आज भी महसूस कर मुझसे दूर रहते हैं और उनका हितचिंतक होने के नाते आजकल मैं अपने निजी करतबों का श्रेय अपने कम्युनिस्ट चिंतन को नहीं देता। कम्युनिस्ट साहित्य सस्ता मिलता है। मैंने पढ़ा। खूब पढ़ा, खूब पढ़ा, खूब पढ़ा, खूब पढ़ा। नतीजा यह हुआ कि राजनीति और अर्थशास्त्र की समझ तो ज्यों की त्यों रही, अंग्रेजी दुरुस्त हो गई। अंग्रेजी में मार्क्स अच्छे आए। यह अपेक्षित नहीं था पर हो गया। मेरे मामले में ऐसा अक्सर हो जाता है। मगर छात्रों की एक सभा में मैंने जब कहा कि यदि आप लोग मार्क्सवाद का अध्ययन करेंगे तो आपको मार्क्स अच्छे मिलेंगे, तो सब लोग, जिसमें उनके न पढ़ने वाले प्रोफेसर भी शुमार थे, हो-हो करके हंसने लगे। खूब हंसे, खूब हंसे। वे मेरी अनुभवजन्य व्यथा को नहीं समझ पाए। इसके पूर्व कि मैं स्पष्टीकरण देता और अपनी बात समझाता, कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्यों ने, जिनकी अंग्रेजी सो-सो थी, शुद्ध हिन्दी में मेरा समर्थन कर दिया कि मैं ठीक कहता हूं, मार्क्सवाद पढ़ना छात्रों के हित में है। दरअसल वे यह समझ रहे थे कि ज्यादा मार्क्स मिलने का लालच देकर मैं छात्र मित्रों को मार्क्स पढ़ने के लिए तैयार कर रहा हूं और प्रचार की यह आकर्षक नीति है। वास्तव में वे मेरी शिक्षा संबंधी धारणाओं से अपरिचित थे जिसके अंतर्गत मैं मानता हूं कि ज्यादा मार्क्स प्राप्त करने का प्रयत्न करना किसी छात्र के व्यक्तित्व के विकास में घातक है। उदाहरण के रूप में मैं अपनी मार्कशीट और व्यक्तित्व को पेश करता हूं जो एक दूसरे से प्रभावित हुए हैं। जब मैंने शिक्षा सम्बन्धी अपनी यह विशिष्ट धारणा कुछ स्थानीय शिक्षा-शास्त्रियों (हमारे नगर में वृद्ध प्रोफेसरों को शिक्षा-शास्त्री कहने का रिवाज है) को बताई तो उन्होंने मेरा कालेजों में घुमना बन्द कर दिया। अब हालत यह थी कि कम्युनिस्ट पार्टी मेरा समर्थन कर रही थी और शिक्षा शास्त्री मुझे छात्रों के बीच घुसने नहीं दे रहे थे, और मैं था जो दोनों से असहमत था पर शालीनतावश चुप था। वह तो मामला और बढ़ता पर नई पीढ़ी के सौभाग्य से देश में वेस्ट-इंडीज टीम आ गई और मैं टैस्ट मैच में राष्ट्र गौरव की वृद्धि की संभावनाएं तलाशता कमेंट्री सुनने लगा। यह तभी की बात है जब मैंने खेलकूद पर वह लेख लिखा था जिस पर चर्चा करते हुए एक स्थानीय स्पोर्टस क्लब में मारपीट हो गई थी।

एक दिन मैंने अपने घनिष्ठ मित्रों से, जो बाद में पता लगा कि मूलतः कांग्रेसी थे, अपनी समस्या बताई, विचार बताए। उन्होंने सोच समझ कर कहा कि यदि तुम सभी दलों से असहमत हो तो तुम कांग्रेसी हो। अपने बारे में यह संदेह प्रायः मुझे रहा है कि मैं कांग्रेसी हूं। क्योंकि मेरी यह धारणा है कि हर व्यक्ति जो भारत में जन्म लेता है कांग्रेसी होता है। वह कितने प्रतिशत होता है यह बहस का विषय हो सकता है, पर वह होता अवश्य कांग्रेसी है। रूठता रहता है मनता रहता है, टूटता रहता है जुड़ता रहता है पर विश्लेषण के नाजुक मानदंडों के अनुसार वह अन्दर से वही रहता है। यदि मैं 'कुछ न था तब खुदा था, कुछ न होता तब खुदा होता', वाले शेर का राजनीतिकरण करूं तो वह यूं होगा, 'कुछ न था तब कांग्रेसी था, कुछ न होता तो कांग्रेसी होता। डुबारा मुझको होने ने, मैं न होता तो क्या होता।' तो 'हम तो तेरे हैं सनम' के अन्दाज में मैंने स्वयं को कांग्रेसी घोषित किया। पर चूंकि यह कोई चौंकाने वाली बात नहीं थी अतः कोई नहीं चौंका। शायद सब मुझे पहले से जानते थे। या यह जानते थे कि हश्र क्या होना है। पर अपनी आदत का मारा मैं तब भी कांग्रेस के खिलाफ लिखने लगा और मैंने ठीक लिखा है या गलत यह निश्चित नहीं कर सका, क्योंकि मेरे लेख पर सर्वाधिक बधाइयां कांग्रेसियों ने ही दी। ऐसे में बड़ी उलझन हो जाती है जब वही बधाई दे जिस पर लिखा हो।

पर इधर मैंने चिंतन किया। खूब किया, खूब किया, खूब किया। और यह निश्चित किया कि जैसे ही संकट काल हटा, मैं एक नया दल गठित करूंगा जिसके सदस्य वे होंगे जो सीधेसाधे जीव हैं, राजनीतिक लफड़ेबाजी से दूर रहते हैं। सुबह उठते हैं, दिन भर काम काज में लगे रहते हैं, शाम को परिवार या यार के साथ घूमते हैं, रात को सो जाते हैं अथवा जागते रहने के बाद सोते हैं। मैं कहता हूं इस देश में सबसे बड़ी मेजारिटी उन ही लोगों की है। वे कोई नीति नहीं चलते, जिधर तबियत हो वोट करते हैं या नहीं करते या करने पर जिनका वोट हमेशा इनवेलिड हो जाता है क्योंकि एक साथ दो-चार पार्टी को कर आते हैं। आखिर हर चुनाव में साठ-सत्तर प्रतिशत से ज्यादा वोट तो गिरते नहीं। तो जो तीस चालीस प्रतिशत वोट नहीं देते उनकी भी तो कोई पार्टी होनी चाहिए। वे सब मेरी पार्टी के मेंबर होंगे। दल की दृष्टि से सबसे बड़ा दल वही होगा, उन लोगों का जो किसी दल में नहीं हैं और मैं उन सबका एक दल बनाऊंगा। यह दल किसी भी दल के साथ हो सकता है या विरुद्ध हो सकता है या दोनों न हो या जिसके कुछ सदस्य किसी के साथ हों, कुछ किसी और के साथ। उनको स्वतंत्रता रहेगी अपनी नीतियां बनाने की मगर मजबूरी नहीं होगी कि वे कोई नीति बनाएं या बनाएं तो उस पर चलें और चलें तो उसके खिलाफ न जाएं। शर्त सिर्फ यही रहेगी कि वह दल एक दल कहलाएगा और मुझे उसका नेता चुनना होगा या न चुनने से कोई अन्तर नहीं पड़ेगा क्योंकि यह तय होगा कि मैं नेता रहूंगा। सदस्यता की यह पहली और अन्तिम शर्त रहेगी, अर्थात मुझे नेता न मानने से ही कोई शख्स सदस्यता से वंचित हो जाएगा। इसके बदले में मैं उसे अपनी तबीयत की नीति बनाने की स्वतंत्रता दूंगा जिस पर मैं प्रश्न नहीं करूंगा और जिस पर चलना उसके लिए जरूरी न होगा। या वह चल भी सकता है। दल के अच्छे सदस्य वे ही होंगे जो किसी किस्म की वैचारिक और रचनात्मक हरकतों से दूर रहेंगे और वे ही अधिक होंगे। इस माने में हमारा दल आदर्श दल होगा कि उसके सदस्यों का कोई कार्यक्रम नहीं और जो है उसका दल से कोई सम्बन्ध नहीं। सम्बन्ध यदि हुआ तो यह दल के लिए गर्व की बात होगी पर दल ऐसी पतनोन्मुख प्रवृत्ति से लगातार बचेगा। नेता के रूप में मैं वैसे ही सक्रिय रहूंगा जैसे आज लेखक के रूप में हूं, अर्थात कोई फर्क नहीं पड़ता।

आपका क्या ख्याल है? आप मुझसे सहमत हैं? दल की सदस्यता के लिए यों मुझ से अर्थात नेता से सहमत होना कदापि आवश्यक नहीं। अनेक परस्पर सहमतियों के बंडल का नाम हिन्दुस्तान है प्यारे! और हम पहले हिन्दुस्तानी हैं बाद में और कुछ।

साभार हाम्यम्



कितने अखरोट और दादाम ईकट्ठे कर दिये इसने ?
यार, उस गिलहरी ने खोह में अखरोट वादामों का स्टॉक इकट्ठा कर लिया है। हम तुम मिल कर उस पर हाथ साफ कर सकते हैं।
हम उठायेंगे कैसे ?
मैं कुड़े में से पॉलीथीन का लिफाफा उठा कर लाता हूँ तुम उसी में उठा लाना।
अच्छा !
कां कां कां कां (अर्थ गिलहरी दूर चली गई है। जल्दी से खोह में घुस कर माल समेट ले आओ) कां·कां·कां।
पंचतंत्र
तभी हवा चल पड़ती है।
बैग में हवा भर जाती है और वह चूहे समेत हवा में उड़ जाती है। अखरोट, वादाम गिर पड़ते हैं।
उपसंहार–जो दूसरों के माल पर हाथ साफ करने की कोशिश करते हैं देर सवेर उनका अपना पत्ता साफ हो जाता है।

...पा) (DT)
...गढ़ (उ०प्र०)

पृष्ठ १२ से आगे

होता है, वैसा ही था ?'

'जी हाँ ।'

'ओह ।' स्वदेशकुमार के मुंह से निकला ।

बलजीत मुस्करा रहा था ।

'यह तो एक जैसा केस लगता है !' स्वदेशकुमार बोला, 'बड़ी हैरानी की बात है ।'

इन्स्पेक्टर आदर्श अरोड़ा ने सारी कहानी सुनाने के बाद कहा, 'मैंने इक्के वाले सलीम की तलाश में दो आदमी दौड़ा दिये हैं । यह मालूम करना जरूरी है कि उसे टोकरा किस सेठानी ने दिया ? क्या वह इलाहाबाद से आई थी ? मैंने सविता के पति को टेलीग्राम दे दिया है कि वह अपने माता-पिता को लेकर फौरन शाहजहाँपुर चला आए ।'

'आदर्श ! तुम्हारा इस बारे में क्या अनुमान है ?' स्वदेशकुमार ने पूछा ।

'किस बारे में ?'

'क्या सविता की हत्या उसकी ससुराल वालों ने की और लाश उसके मैके भिजवा दी !'

'ऐसा अनुमान नहीं लगाया जा सकता ।'

'क्यों ?'

'मैंने सविता के माता-पिता से पूछताछ की है । मुझे पता चला है कि सविता से उसके ससुराल वाले खुश थे । अगर कोई नाराजगी होती तो दहेज जैसी बात पर होती । तब भी हत्या के बाद लाश यहां न भेजी जाती । ऐसे मामलों में दूसरी तरह के बहाने बनाए जाते हैं । बहू को मारकर कह दिया जाता है कि रसोईघर में जल मरी, स्टोव फटने से भुन गई, आत्म-हत्या कर ली, या ऐसा ही कोई दूसरा बहाना । ऐसी हालत में लाश को फौरन जला देने की सोची जाती है । मुझे तो मामला गम्भीर जान पड़ता है ।' इन्स्पेक्टर बोला ।

बलजीत बोला, 'अच्छा, पहले आप मिसेज पूर्णिमा के पोस्ट-मार्टम की रिपोर्ट दिखाइये ।'

'मैं रिपोर्ट पढ़ चुका हूं । उसमें कुछ नहीं है ।' यह कहकर इन्स्पेक्टर ने हैंडबैग में से रिपोर्ट निकालकर बलजीत को दे दी ।

उसके कथनानुसार रिपोर्ट में वाकई [illegible] न था । ऐक्स-रे की रिपोर्ट थी कि
पर नई पीढ़ी के स। मजबूत था । उसका दिल
[illegible]हीं हुआ था । दिल की हरकत बन्द होने का कारण कोई गहरा सदमा था ।

रिपोर्ट पढ़ कर बलजीत मुस्कराया ।

स्वदेश कुमार ने कहा, 'बलजीत बाबू ! आपने कल रात कहा था कि पोस्ट-मार्टम की रिपोर्ट देख लेने के बाद ही आप अपनी राय बता सकेंगे ।'

'इशारा तो मैं अपनी राय का पहले भी दे चुका हूं ।' बलजीत बोला, 'मैंने साफ कह दिया था कि पूर्णिमा जी की मौत कुदरती नहीं थी । अब मैं और भी स्पष्ट शब्दों में बता रहा हूं कि पूर्णिमा जी की हत्या की गई ।'

उसके कथन पर सब के सब दंग रह गए ।

इन्स्पेक्टर हैरानी में बोल उठा, 'क्या पूर्णिमा भाभी की सचमुच हत्या की गई है ?'

'हाँ, इन्स्पेक्टर साहब ! हत्यारे ने हत्या का आधुनिकतम तरीका अपनाया, ताकि पुलिस को भी कत्ल का सन्देह न होने पाये ।'

'आप यह किस आधार पर कह रहे हैं ?'

'गर्दन पर मच्छर के काटने जैसा नन्हा-सा निशान आप भी देख चुके हैं, इन्स्पेक्टर साहब !'

'हां, यह तो देखा है मैंने ।'

'तो यह जान लीजिये कि वह निशान मच्छर के काटने से नहीं बना ।' बलजीत ने बताया, 'कातिल ने किसी बहुत बारीक फलक के हथियार का इस्तेमाल किया था । वह उसने गर्दन की राह दिल तक उतार दिया और दिल को पंकचर कर दिया ।'

'ऐक्स-रे की रिपोर्ट में तो साफ लिखा है कि दिल कहीं से भी पंकचर नहीं हुआ ?' इन्स्पेक्टर आदर्श ने हैरानी से पूछा ।

बलजीत मुस्कराते हुए बोला, 'इतना बारीक निशान ऐक्स-रे की पकड़ में भी नहीं आता ।'

'यह कैसे हो सकता है ? ऐक्स-रे की तेज आंख से कोई घाव या दिल पंकचर छिप जाए, यह तो एकदम असम्भव है ।'

'इन्स्पेक्टर साहब ! आप इसके बारे में जितनी जानकारी रखते हैं, उस हिसाब से आप सही कह रहे हैं । मगर मैं भी झूठ नहीं कह रहा । जब किसी बहुत बारीक हथियार से दिल को पंकचर कर दिया जाए, तब खून की जरा-सी बूंद निकलती है और उसके बाद घाव खुद-ब-खुद बन्द हो जाता है । उस हालत में मच्छर के काटने जैसा निशान ही रह जाता है । खून की उस नन्ही-सी बूंद को छिपाने के लिए ही कातिल ने पूर्णिमा जी की गर्दन पर पाउडर छिड़क दिया था ।'

'ओह ! अब समझा !'

'इस तरह यह सिद्ध हुआ कि अपनी गर्दन पर पूर्णिमा जी ने अपने हाथ से पाउडर नहीं छिड़का था ।'

बलजीत की इस बात पर हर कोई दंग हुए जा रहा था ।

'इन्स्पेक्टर साहब ! सविता की लाश के बारे में जो आपने कहानी सुनाई है, उससे मेरे दिल में खुदबुद-सी हो रही है । यहां अभी अन्तिम संस्कार की तैयारी होगी । क्यों न तब तक हम बरेली रोड तक हो आयें !' बलजीत बोला ।

'आइये !' इन्स्पेक्टर सहमत हो गया ।

बलजीत ने अपने साथियों से कहा, 'राजीव ! तुम अनिला को लेकर रेलवे स्टेशन पहुंचो ।'

'वहां क्या है ?' अनिला ने पूछा ।

'वहां तुम्हें यह पूछताछ करनी है कि आज सुबह पांच या पौने पांच बजे कौन-सी रेलगाड़ी कहां से आई । पूछताछ के लिए यह बात दिमाग में रखना कि जिस सेठानी ने इक्के वाले सलीम को टोकरा सौंपा था, उसके साथ एक काला भुजंग आदमी भी था । ऐसे आदमी को लोग आसानी से नहीं भूल जाते ।'

'जानकारी में कौन-सी बात सामने रखनी है ?'

'यह कि इक्के वाले को अमरूदों का टोकरा सौंप कर सेठानी टैक्सी में गई थी या इक्के में । टैक्सी या इक्के का नम्बर वगैरह भी नोट कर लाना ।'

'समझ गए ।' राजीव ने कहा और अनिला को साथ लेकर रेलवे स्टेशन को चल दिया ।

इन्स्पेक्टर आदर्श अरोड़ा के साथ बलजीत बरेली रोड पहुंचा । बंगला नम्बर २१४ में वही माहौल था, जैसा सुधा के बंगले में वे छोड़ आए थे ।

गिरिजा किशोर अग्रवाल ने पुलिस इन्स्पेक्टर को जीप से उतरते देखा तो वह उसके पास चला आया । इन्स्पेक्टर ने उसे बलजीत से परिचित कराया ।

'कहिये, मैं क्या सेवा कर सकता हूं ?' गिरिजा किशोर ने पूछा ।

इन्स्पेक्टर ने मुस्कराकर कहा, 'अग्रवाल जी ! हम यहां सेवा कराने नहीं आए, बल्कि सविता जी की हत्या के बारे में छानबीन के लिए आए हैं। बलजीत बाबू लाश देखना चाहते हैं।'

'आइये ! आपने जैसा कहा था, उसे ध्यान में रखते हुए अभी हमने लाश को नहलाया नहीं है। आप मेरे पीछे-पीछे चले आइये। मैं कमरे में से औरतों का जमघट हटाता हूं ?' यह कह कर वह तेज-तेज चाल से पहले कमरे में घुस गया।

दो मिनट में ही कमरा खाली करवा दिया गया।

बलजीत ने पांच मिनट तक लाश का मुआयना किया। इसके बाद वह इन्स्पेक्टर को एक ओर ले जाकर बोला, 'बिल्कुल वैसा ही केस है। सविता की भी बारीक फलक के किसी हथियार से दिल पंकचर करके हत्या की गई है। खून की नन्ही बूंद छिपाने के लिए ही गर्दन पर लिपस्टिक पोती गई।'

'यही तो मैंने कहा था।'

'इन्स्पेक्टर साहब ! यहां पर एक सवाल जरा टेढ़ा मालूम हो रहा है।'

'कैसा सवाल ?' इन्स्पेक्टर ने पूछा।

'यह कि पूर्णिमा को कल रात श्रद्धा के मकान में मार डाला गया, जबकि सविता की लाश देख कर मैं निश्चय से कह सकता हूं कि इसकी हत्या को दो दिन बीत चुके हैं। अगर यह मान लें कि सविता की हत्या इलाहाबाद में की गई, तो हत्यारा क्या वहां से पूर्णिमा की हत्या के लिए शाहजहांपुर आया ? उसने एक ही ढंग से, एक ही हथियार से, दो अलग-अलग शहरों में कत्ल क्यों किये ?'

'यही बात मुझे भी परेशान कर रही थी।'

'यह भी तो सोचिये कि कातिल ने दो शादीशुदा लड़कियों को अपना शिकार क्यों बनाया ? क्या सविता और पूर्णिमा के बीच कोई सम्बन्ध था ?'

'इस बारे में तो मेरे दोस्त स्वदेश कुमार ही कुछ बता सकेंगे कि इन दोनों नवयुवतियों में कोई नाता या मेल-जोल था या नहीं।'

'इन्स्पेक्टर साहब ! मैं एक और बात भी सोच रहा हूं।'

'वह क्या ?'

'यह भी हो सकता है कि सविता की हत्या यहीं शाहजहांपुर में की गई हो। जाहिर यह किया गया कि लाश इलाहाबाद से भेजी गई है।' बलजीत ने कहा।

'ओ...ह ! इस पहलू पर तो मेरा ध्यान ही नहीं गया।' इन्स्पेक्टर बोला, 'सचमुच जासूस के सोचने का ढंग हम पुलिस वालों से अलग और अनोखा होता है। ऐसी बातें आप ही सोच सकते हैं।'

'आइये, यहां से चलें।'

'अब कहां चलियेगा ?'

'मिसेज सुधा के बंगले पर। हमें अब श्रद्धा और उसके माता-पिता से पूछताछ करनी होगी। कल रात उनके वहां जो संगीत सभा हुई, उसमें किस-किसने हिस्सा लिया ? क्या उस सभा में केवल औरतें शामिल थीं या मर्द भी आए थे ? अगर सिर्फ औरतें थीं तो क्या वह सेठानी भी आई थी जिसने इक्के वाले सलीम को अमरूदों का टोकरा बरेली रोड के बंगले पर पहुंचाने को सौंपा था ?'

'हां, यह आपने सही ढंग सोचा है पूछ-ताछ का। अगर वह सेठानी भी श्रद्धा के यहां आमंत्रित थी तो फिर सविता और पूर्णिमा की कातिल निश्चय से वही हो सकती है। उसका काला भुजंग साथी भी इस करतूत में शामिल होगा।' इन्स्पेक्टर बोला।

दोनों स्टेशन रोड को चल पड़े।

अनिला और राजीव ने रेलवे स्टेशन जाकर पूछताछ शुरू कर दी थी। वहां से उन्हें बड़ी रोचक सूचनाएं मिलीं।

एक काले भुजंग आदमी के साथ छबीली सेठानी को बहुत से लोगों ने घूर-घूर कर देखा था। ऐसी जोड़ी पर कइयों ने हैरानी भी जाहिर की थी।

राजीव और अनिला को तीन-चार कुली भी मिल गए जिन्होंने सेठानी का सामान उठा कर स्टेशन से बाहर निकाला था। उन कुलियों की जबानी उन्हें बहुत मजेदार सचाई की जानकारी मिली।

हुआ यह इलाहाबाद से एक गाड़ी सवेरे पौने पांच बजे आई थी। सेठानी और काला भुजंग आदमी उस गाड़ी से नहीं उतरे थे।

दूसरी दिलचस्प सचाई यह थी कि काला भुजंग आदमी रात को किसी गाड़ी से उतरा था। सेठानी उसे लेने के लिए स्टेशन आई थी। काला भुजंग आदमी फर्स्ट क्लास के वेटिंग रूम में ठहरा हुआ था। जब इलाहाबाद से गाड़ी आई तो उससे तीन-चार मिनट पहले उसने चार कुलियों की मदद से अपना सामान फर्स्ट क्लास के वेटिंग रूम से निकलवाया था। उसके सामान में एक टोकरा भी था जो तीन फीट ऊंचा और पांच फीट लम्बा था। टोकरे पर लाल कागज लिपटा हुआ था और हरी रस्सी उसके इर्द-गिर्द बंधी हुई थी।

तीसरी मजेदार बात यह मालूम हुई कि स्टेशन से बाहर निकलकर उन्होंने टोकरा सलीम के इक्के पर लदवाया और उसे रवाना कर दिया था। काले भुजंग आदमी के साथ सेठानी सड़क के किनारे चल दी थी और एक एम्बेसेडर गाड़ी के पास वे जा पहुंचे थे। कार की ड्राइविंग सीट पर एक औरत बैठी थी। उसके सिर के बाल सुनहरे रंग के थे। उसने बैल-बॉटम पेंट पहन रखी थी। कमीज के ऊपर हल्के नीले रंग का काड्रयि का कोट था। एक हाथ में सोने का मोटा कंगना था।

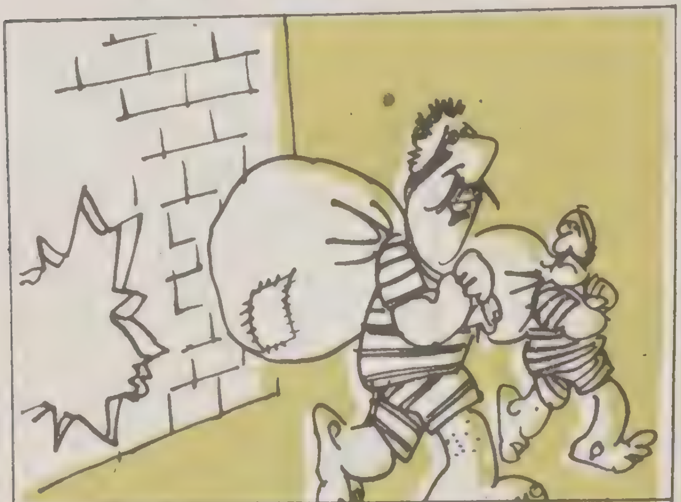
एक रेलवे बाबू ने यह भी बताया कि जिस कार में सेठानी और उसका साथी जा बैठे थे, उसका नम्बर डी. एल. ६१७ था।

इतनी जानकारी लेकर राजीव और अनिला खुशी से फूले न समाए। उनकी मेहनत बेकार नहीं गई थी।

श्रद्धा और उसके माता-पिता को जासूस बलजीत एक ओर ले गया। इंस्पेक्टर आदर्श अरोड़ा भी उनके साथ रहा।

शेष आगामी अंक में

आपको पता लगता है कि दशहरा आ गया जब...



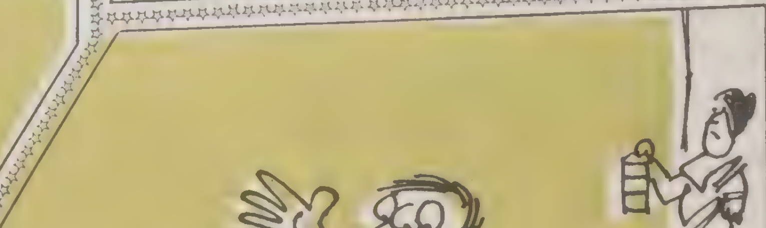
जब चोरों को ओवर टाइम चोरी करनी पड़ती है। सारे परिवार रामलीला देखने गये होने के कारण चोरों के लिये मैदान साफ रहता है।



जब देश में दिलीप कुमार थोक भाव में मिलने शुरू होते हैं। रामलीला का हर कलाकार स्वयं को दिलीप या मीना कुमारी से कम नहीं समझता।



आप एक बजे भी गली में घूमें तो पुलिस वाला नहीं टोकता।



जब आप प्रायः दफ्तर के लिये लेट हो जाते हैं। राम-लीलाओं की कृपा से रात को एक बजे के बाद ही सोने के कारण नींद देर से खुलती है।


आज
मेरा नाम डिशूं डिशूं
आपके पास रात को सिगरेट-बीड़ी खत्म होने की चिन्ता नहीं फटकती। रामलीलाओं के आस पास रात एक-दो बजे तक बीड़ी-सिगरेट, मूंगफली उपलब्ध रहती हैं।
जब फिल्म डिस्ट्रिब्यूटर के रंग उड़े-उड़े नजर आते हैं। कोई भी नाइट शो हाऊसफुल नहीं जाता।
जब प्रायः आपको बिस्तर के नीचे छुपना पड़ता है। रामलीला वालों के चंदा मांगने आने के कारण।
जब घर की नारियों की श्रद्धा बन्दरों में बढ़ जाती है पेड़ पर बन्दर दिखते ही वह हाथ जोड़ देती हैं।
जब लाऊड स्पीकरों का चारों ओर ऐसा शोर होता है कि चुनावों की याद ताजा हो जाती है व नेताओं के रौंगटे खड़े होते हैं।
जब मैं चलता हूँ तो धरती डोलती है...हा हा हा हा !
जब घर के लोग रामलीला छाप डायलाग मारने लगते हैं।

टेनिस कैसे खेलें



अर्द्ध वाली—अर्द्ध वाली उस स्ट्रोक को कहते हैं, जबकि जमीन पर गिरते ही गेंद को मारा जाता है। यह एक ऐसा स्ट्रोक है, जो आपत्तिकाल में लगाया जाता है, जबकि खिलाड़ी अपने आपको ठीक ढंग से सम्भालने का समय नहीं मिलता है। अर्द्ध वाली में भी मुंह सामने रखकर दाएं या बाएं ही रखना होता है और शरीर का भार भी अगले पैर पर डालना पड़ता है, परन्तु पीछे की ओर झूलन कई परिस्थितियों पर निर्भर करता है जैसे कि जाल से अंतर और गेंद को कितना संवेग देना है। इसी प्रकार, पीछा करने की क्रिया में भी लम्बा झूलन तभी संभव होगा, जबकि स्ट्रोक एकदम नीचे से लगाया जाये। जाल के समीप तो पीछे की ओर झूलन बिलकुल छोटा होगा और जहां गेंद गिरे, उसके पीछे का किनारा पृथ्वी से छूता हुआ होना चाहिए।

इसे सफलतापूर्वक लगाने के लिए भरसक अभ्यास और दक्षता की आवश्यकता है। फिर भी यह एक अत्यन्त लाभदायक स्ट्रोक है, विशेषकर युगल में जहां कई प्रकार की विषम परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं और कभी-कभी तो खिलाड़ी को अपने पैर से गेंद को उठाना पड़ता है।

****

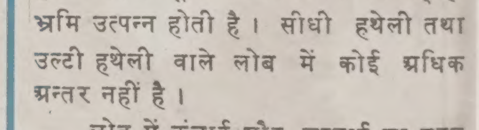
लोब—'लोब' ऐसे स्ट्रोक को कहते हैं, जबकि गेंद ऊपर उठाकर प्रतिद्वन्द्वी के सिर के ऊपर से फेंकी जाती है। यह ठीक है कि इसका प्रायः दुरुपयोग होता है, परन्तु खेल में निर्णायक दृष्टि से यह बहुत प्रभावशाली स्ट्रोक है, विशेषकर एकल (सिंगल्स) में। यह इस प्रकार लगाना चाहिए कि प्रतिद्वन्द्वी आश्चर्य चकित रह जाए। इसके उद्देश्य हैं—कुछ विश्राम प्राप्त करना, खेल को सुस्त करना, ठीक अवस्था में पहुंचने के लिए सहारा प्राप्त करना अथवा प्रतिद्वन्द्वी के वाली मारने के प्रयत्नों को विफल करना और साधारणतया खेल की गति में परिवर्तन लाना। इसका विशेष लाभ उस दशा में होता है, जबकि प्रतिद्वन्द्वी सिर के ऊपर स्ट्रोक मारने में कमजोर हो। अतः लोब का प्रयोग आक्रमण के लिए नहीं, केवल सामरिक दृष्टि से ही किया जाता है।

लोब सीधी हथेली अथवा उल्टी हथेली से लगाया जा सकता है और पकड़ भी उसी प्रकार दोनों में से कोई-सी एक हो सकती है। कई परिस्थितियों में लोब को खण्डित रूप में चोप स्ट्रोक की भांति संरक्षण के लिए प्रयोग किया जा सकता है और गेंद को खुली दिशा में भेज दिया जाता है। सामान्यतया रैकेट इस प्रकार पकड़ा जाता है कि दस्ते के ऊपर अंगूठा और पहली उंगली रहती है, ताकि गेंद को ऊपर की ओर उछलने में सुविधा रहे। रैकेट कमर से ऊपर रखना चाहिए, क्योंकि उतनी ऊंचाई से गेंद अच्छे ढंग से उठाई जा सकती है। रैकेट का सिरा इस प्रकार खुला और चपटा पकड़े रहना चाहिए कि उससे गेंद पीछे की अपेक्षा नीचे से मारी जा सके। स्ट्रोक मारने के पश्चात् पीछा करने की विधि पूर्ण रूप से करनी चाहिए।

गेंद को नियन्त्रित दिशा में भेजने के लिए शरीर के भार का भी उपयोग उठाना चाहिए और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अगला घुटना कुछ अधिक और पिछला कम मुड़ा हुआ होना चाहिए और शरीर का भार अगले पैर की एड़ी पर डालना चाहिए। इस सारी क्रिया के लिए समुचित ध्यान आवश्यक है और आंखें गेंद के पीछे रहनी चाहिए। कलाई, अग्रबाहु, टांगें और पूरे शरीर को एक साथ समन्वित ढंग से काम करना चाहिए। ढीली पकड़ स्ट्रोक के लिए घातक सिद्ध हो सकती है; क्योंकि यदि हिलते हुए हाथ से गेंद को मारा गया तो वह इधर-उधर जा सकती है। तेज तथा भ्रमि वाली गेंद को दृढ़ पकड़ के बिना काबू में लाना कठिन है। यह ध्यान में रखने योग्य बात है कि गेंद के भूमि पर गिरने के पश्चात् ही भ्रमि उत्पन्न होती है। सीधी हथेली तथा उल्टी हथेली वाले लोब में कोई अधिक अन्तर नहीं है।

लोब में ऊंचाई और लम्बाई का बहुत महत्त्व है। लोब इतना ऊंचा होना चाहिए कि प्रतिद्वन्द्वी उस पर स्मैश न कर सके। अतः गेंद १२ से १५ फुट ऊंची फेंकनी चाहिए। एक अच्छा लोब आधार-रेखा से कुछ फुट के अन्तर पर ही पड़ना चाहिए।

क्रमशः



मदहोश



गुमनाम का परिणाम

प्रतियोगिता न० 18
कलाकार की परछाई = राखी
विजेता: विनोद साहनी
35-K/10 रामपुर बाग U.P.

दीवानी बात :-
"प्यार से तुम्हारा दिल नहीं पा सकी तो क्या हुआ, गोली से सीना चीर कर तो पा ही लूंगी"



सर्दियों के लिये

एक मजेदार दीवानी शरारत

आपने प्रायः देखा होगा कि जब आप कोई नया कपड़ा सिलवाकर पहनते हैं तो सिलाई के पास से कोई धागा निकला रह जाये तो दूसरे उसे पकड़ कर खींच कर एहसान जताते हैं । आप ऐसा कीजिये एक पूरी धागे की रील लेकर नये कोट की भीतरी पाकेट में रखें । धागे का सिरा सुई में पिरो कर कंधे की सिलाई से बाहर निकाल, वैसा ही छोड़ दें । जो भी इसे देखेगा, खींचेगा । धागा खिंचता आयेगा, समाप्त ही नहीं होगा । खींचने वाला खिसिया जायेगा ।

